www.shabdkalashpublication.com shabdkalashpublication kalashshabd@gmail.com +91 88218 72539

प्रकाशन :- शब्द कलश पब्लिकैशन

कौशिकी पत्रिका

अपनी पुस्तक प्रकाशित करवाने के लिए संपर्क करें।
+91 88218 72539

अप्रैल 2026 अंक | प्रथम अंक | वर्ष 1 | संपादक :- अनुज पाठक | call :- +91 88218 72539

ग़ज़ल "

(1222 1222 122)

नहीं डोला कभी, जज़्बा हमारा।
सदा चलता रहा सिक्का हमारा।/1/

सड़क की भीड़ में बस आप हम थे।
नहीं देखा गया रुतबा हमारा।/2/

किनारे पर दिखा मंजर सुहाना।
सभी के बीच था किस्सा हमारा।/3/

जरा बैठो मेरे पहलू में आकर।
कहीं मिट जाये ना झगड़ा हमारा।/4/

भले दिल को मे'रे नादान कह लो।
मगर ये है सही हिस्सा हमारा।/5/

शिकायत कर लिया, खुशियाँ बटोरी।
सजा से काम चल जाता हमारा।/6/

-डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "
(कवि, गीत /ग़ज़लकार)

एक कविता तेरी याद में

तेरी नशीली आंखें...
तेरे गुलाबी होंठ...
गोरा गोरा रंग तेरा...
गेसूओं के तेरे नखरे हजार...
एक कविता तेरी याद में...।।१।।

सुंदरता में तुम अव्वल...
गाल तेरे मुलायम मुलायम...
हल्की सी हंसी से...
क्यों करती हो घायल मुझे...
एक कविता तेरी याद में...।।२।।

यूं तिरछी नजरों से...
ना देख मुझे...
एक ही दिल है पास मेरे...
कितनी बार चुराओगी उसे...
एक कविता तेरी याद में...।।३।।

कुछ अलग ही है तेरी स्टाईल...
निराली है तेरी अदा...
तेरी हर चीज पर...
मैं हूं पूर्ण फिदा...
एक कविता तेरी याद में...।।४।।

अच्युत उमर्जी
पुणे महाराष्ट्र

विषय : जीत-हार में ज्यादा दूरी नहीं होती

जीत-हार में ज्यादा दूरी नहीं होती।
हर बार सब इच्छाएँ पूरी नहीं होती।।

राह में अधिक चाह नहीं रखनी चाहिए।
कर्मों की गति केवल परखनी चाहिए।।
धरातल पर रहते हुए नज़र ऊँची रखनी चाहिए।
पावन सृष्टि में केवल नेक दृष्टि रखनी चाहिए।।

कर्मों के दौर में मत हार-जीत की परवाह करो।
कठिन परिश्रम करने से कभी मत आप डरो।।
परोपकारी भावनाओं संग खुशियों से झोली भरो।
सद्भावना और शुद्ध विचार ही अंतर्मन में धरो।।

अपने आत्मबल के आधार पर डट कर खड़े रहो।।
न खुद घबराओ और न ही किसी को धमकाया करो।।
आँख दिखाने वालों के भी खूब काम आया करो।
एकसमान व्यवहार करते हुए आँखें बिछाया करो।।

चालाकियाँ चलाने वालों की इच्छाएँ पूरी नहीं होती।
कमर कसने वालों की तकदीर कभी अधूरी नहीं होती।।
सकारात्मक बदलाव लाने वालों की सोच बुरी नहीं होती।
नज़दीकियांँ बढ़ाने वालों की किस्मत कभी बुरी नहीं होती।।

अंत में जीत-हार में ज्यादा दूरी नहीं होती।
रीत बदलने वालों की कोई मजबूरी नहीं होती।।
ईश्वरीय स्तुति करने वालों की चाह अधूरी नहीं होती।
अधिक सोचने वालों की इच्छा हर बार पूरी नहीं होती।।

कवयित्री-डॉ. ऋचा शर्मा "श्रेष्ठा" करनाल (हरियाणा)

हौसला

हर कार्य हर रूप की
एक पहचान होती है
जिंदगी दुखों की सुखों की
एक उड़ान होती है |

चलते रहते हैं रात - दिन
पर कभी नहीं थकान होती है
क्योंकि उसमें नहीं बल्कि
उसके हौसलों से उड़ान होती है |

जिंदगी कभी-कभी
बोझ सी लगती है
सोच कभी-कभी
अफसोस सी लगती है |

पर जो कर लिया निश्चय
अपने लक्ष्य पर
हर दूरी उसके लिए
आर - पार लगती है |

कार्य भी समय जैसा है
समय का ही चक्र है
जो हमेशा परिवर्तनशील है
समझें अपने आप को |

परिवर्तन की शक्ति स्व में है
संसार की हर भक्ति स्व में है
स्व की उड़ान ही शिव
हौसलों की उड़ान है |

विद्या वाचस्पति शिव बहादुर बिन्द 'शिव' (शिक्षक)
सरवतखानी भदोही उ०प्र०

कुल मात्रा -- 19
***पदांत -- 121 (जगण)**
मापनी -- 122-122-122-121
आधार छंद- सगुण

***सृजन शब्द -- करें वास एकांत वास**

बची उम्र थोड़ी करो कुछ विचार।
नहीं है सही काल करना विहार।।
किये जो जतन धन कमाये हजार।
नहीं काम आये सुसंग्रह अपार।।

सभी सुत-सुता पौत्र बहुएँ विचार।
करो शान से दिन सभी ये गुजार।।
नहीं ध्यान देगें वो मरणोपरांत।
सदा भूल जायें सुनो सब वृतांत।।

करो त्याग परिवार धन-धाम गेह।
नहीं याद करिये न रत्ती सनेह।।
रखे सम्पदा दान कर के प्रवास।
करें वास एकांत अज्ञातवास।।

वहाँ घास कुटिया बना के विकास।
करें वास भज ओम होगें उजास।।
प्रकृति के दिये फल व पत्ती सुकंद।
सभी भोग करिए करें प्रभु पसंद।।

वहाँ स्वर्ग- बैकुंठ उत्तम मकान।
मिले सुख खजाना अनुपम पुरान।।
"अमर" श्रेष्ठ है लाभ अज्ञातवास।
धरो-धारणा-ध्यान भूलो न खास।।

अमरनाथ सोनी अमर,

माँ के प्रति बेटे की अभिव्यक्ति

मातु रक्त का कतरा कतरा, न कहता मैं ये कर्ज तेरा।
औ गर्भ पला फिर दूध पिया, न यह सब कहना फर्ज मेरा।

हाथ जले कभी आंखें बही,मां चुल्हे में रोटी सेकी।
सद्गुण सब्जी से पोषित कर, अपने सपने मुझमें देखी।
पर मां तुझको आदर ना दूं, क्या इतना भी ना फर्ज मेरा।
मातु रक्त का कतरा कतरा,न कहता मैं ये कर्ज तेरा

तपती गर्मी,आंधी तूफान, ठिठुरन या बारिश घमासान।
उनमें कैसे अलमस्त रहा ,तेरा तप था अब हुआ भान।
दूं उन्हें प्रेम सम्मान जरा, जीने का बना तर्ज मेरा।
मातु रक्त का कतरा कतरा, न कहता मैं ये कर्ज तेरा।

है उम्र उड़ी धुंए के संग,कुछ कहे कहानी बाल श्वेत।
कुछ सपनों के क्रय-विक्रय में, हर क्षण फिसली ज्यों हाथ रेत।
मां की मुस्कान रहे मुख में,अब बस ईश्वर से अर्ज मेरा।
मातु रक्त का कतरा कतरा ,न कहता मैं ये कर्ज तेरा।

वीणा खंडेलवाल
तुमसर महाराष्ट्र

शीर्षक : दोस्ती

दोस्ती एक मीठा सा एहसास होती है,
दिल के हर दर्द की ये दवा खास होती है।
बिना कहे जो समझ जाए हाल-ए-दिल,
वही सच्ची यारी की पहचान होती है।
हँसी में साथ, ग़म में सहारा बनती है,
हर मुश्किल में राह दिखाने वाली होती है।
जो गिरने न दे हमें हालात के बोझ तले,
वही दोस्ती की असली कहानी होती है।
न धन से, न दौलत से तौली जाती है,
ये तो दिल से दिल की डोरी कहलाती है।
रिश्तों की भीड़ में जो सबसे अलग लगे,
वही दोस्ती सबसे प्यारी कहलाती है।
छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ बाँटती है,
हर अधूरी बात को पूरी कर जाती है।
बिना वजह जो मुस्कान दे जाए चेहरे पर,
वो दोस्ती हर पल को खास बनाती है।
वक़्त बदले, हालात बदल जाएँ चाहे,
सच्ची दोस्ती कभी नहीं बदलती है।
दूरी चाहे कितनी भी क्यों न हो जाए,
दिलों की नज़दीकी वही रहती है।
दोस्ती एक अनमोल खज़ाना होती है ।

डॉ गणपत श्रीपतराव माने लातूर महाराष्ट्र

"जुबाँ पर गुल दिल में खारें"

जुबाँ पर गुल और दिल के अंदर खारें नहीं रखते ।
हम अपने पास कभी दोधारी कटारें नहीं रखते ।।

सूरत देखकर किसी से भी रिश्ता नहीं जोड़ा करते,
हम म्यान को देखकर कभी भी तलवारें नहीं रखते ।

काम की खबर हो तो उसे हम संजों लिया करते हैं,
माना कि संभालकर सारी रद्दी अखबारें नहीं रखते ।

जो भी दिल में हो उसे हम उसे मुँह पर कह देते हैं,
पत्थर की हिफ़ादात में सीसे की दीवारें नहीं रखते ।

खुद बिठाकर सत्ता पर खुद तख्त पलट भी देते हैं,
जो वादा करके भूल जाएँ वो सरकारें नहीं रखते।

कोई भी रुत हो हम तो फूल खिला लिया करते हैं,
मौसमों के दायरों में बांध कर हम बहारें नहीं रखते।

साफ रखते हैं हम अपनी जुबाँ के सीसे को लेकिन,
खामियां देखने को सीसा रखते हैं, दरारें नहीं रखते।

हर किसी को देते हैं हम तो फूलों के ये हसीं गुलशन,
हम बाँध कर अपने घर में कभी भी बहारें नहीं रखते।

हमने कब कहा कि सिर्फ हम ही हैं सबसे भले यहाँ पर,
मगर किसी का भी करें हम बुरा ये दरकारें नहीं रखते।

जो भी बात हो इस दिल में कह देते हैं हम तो मुँह पर,
हमेशा के लिये किसी से हम कभी तकरारें नहीं रखते।

हम "राज़" जरूर है मगर हमराज़ों के लिए नहीं हैं,
हम रूहानी रिश्तों में फरेबों की दरकारें नहीं रखते ।

- राकेश राज भाटिया
- थुरल-काँगड़ा हिमाचल प्रदेश

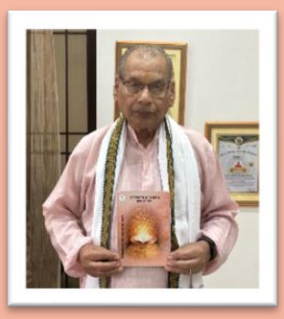

"आदित्यायन–अमृत कलश" — शौर्य, संवेदना और चिंतन का अनुपम संगम
"आदित्यायन–अमृत कलश" का शब्द कलश प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित होना हमारे लिए अत्यंत गर्व, हर्ष और सम्मान का विषय है।
इस कृति के रचनाकार विद्यावाचस्पति डॉ० कर्नल आदिशंकर मिश्र 'आदित्य' भारतीय सेना में कर्नल के पद पर कार्यरत रहे—ऐसा व्यक्तित्व, जिसने एक ओर राष्ट्ररक्षा का दायित्व निभाया, तो दूसरी ओर साहित्य के माध्यम से समाज को विचार, संस्कार और संवेदना प्रदान की।
इस पुस्तक की रचनाओं में शब्द मानो अनुशासन, तेज और गरिमा के साथ आगे बढ़ते दिखाई देते हैं। यह अत्यंत प्रेरक अनुभव है कि जो व्यक्तित्व रणभूमि में साहस और समर्पण का प्रतीक रहा, वही कलम के माध्यम से जीवन-मूल्यों, संस्कृति, धर्म और मानवीय चेतना को स्वर देता है।
"आदित्यायन–अमृत कलश" केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि अनुभव, तप, राष्ट्रभावना और मानवीय संवेदनाओं का सजीव संकलन है। इसकी रचनाएँ पाठकों को चिंतन, प्रेरणा और आत्ममंथन की दिशा प्रदान करती हैं।
हमें पूर्ण विश्वास है कि यह उत्कृष्ट कृति पाठकों के हृदय में विशेष स्थान बनाएगी तथा समकालीन हिंदी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करेगी।
— अनुज पाठक
संस्थापक
शब्द कलश प्रकाशन
संपर्क सूत्र :- 7693086736

जानकी जन्मोत्सव

जनक नन्दनी जगत वन्दनी रामप्रिया सिया जानकी ।
अजर अमर बल बुद्धि वर देती माता श्री हनुमान की ।।

मैं बालक हूं बुरा भला हूँ जैसा भी हूँ तेरा माँ ।
पूत कुपूत भले हो जाये पर माँ रहे सुमाता माँ ।।
मेरी मति को सुमति बना दे तू समर्थ है मेरी माँ ।
बाल हसे तो माँ हसती है रोये पूत तो रोती माँ ।।
वात्सल्यमयी करूणामयी माता रक्षा करना प्रानकी ।.....१

तेरी कृपा कटाक्ष प्राप्त कर रंक अवनिपति होते है ।
चिंता रहित सदा रहते जो गोद तुम्हारी में सोते है ।।
शरण गहे जो जगजननी की जग में वो नही रोते है।
सुयश शांति सुख सम्पत्ति सुमन माल सी ढोते है ।।
मातृ मैथिली महिमामयी माँ जननी तुम्ही जहान की ।.....२

तेरे लिए राम प्रभु रोते है विरही जब हो जाते है ।
श्रुति संत सदग्रंथ शास्त्र सब यश तेरा ही गाते है ।।
दया दृष्टि जब तुम करती तो नर पारस हो जाते है ।
तेरी ही महिमा गा गाकरके नर भव से तर जाते है ।।
तारनहारी जग पालनहारी शुभ सुखदात्री माँ जानकी ।.....३

माधव मास तिथि नवमी को धरा धाम पर आयी ।
सुर नर ऋषि मुनि भक्त जनों ने तेरी महिमा गायी ।।
तेरी बाल सुलभ सब क्रीड़ा जनक राज को भायी ।
किया अकाल सब दूर राज्य से सुख समृद्धि छायी ।।
मिथला को महिमामय कीन्ही शुभ नवरत्नों की खानकी ।.....४

वाल्मीकि शारद श्रुति नारद महिमा क्या कह सकते ।
साधु संत सब ऋषि मुनि जन गुण कहते नही थकते ।।
तेरे गुणों को जो गाये नित तो उसके सब दुख कटते ।
सप्त द्वीप नव खण्ड सभी माया में तेरी सदा भटकते ।।
दयादृष्टि हो जाये मुझ पै माँ भगवती और भगवान की ।.....५

डा. राजेश तिवारी " मक्खन "
झांसी (उ. प्र.)

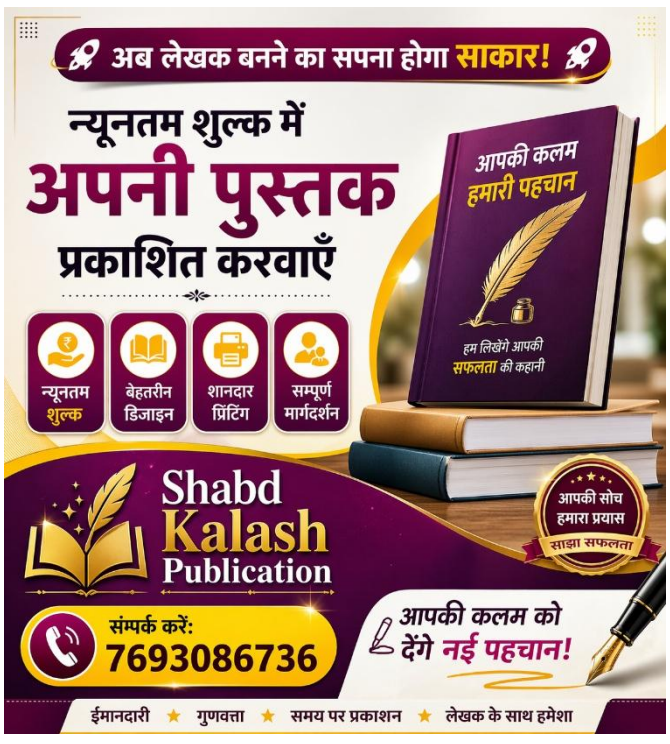

जीवन की राह”

जीवन की राह कभी आसान नहीं होती,
हर मोड़ पर नई पहचान नहीं होती।
संघर्ष की धूप में जो चलना सीख जाता है,
उसके लिए कोई भी शाम वीरान नहीं होती।

कभी खुशी की बारिश, कभी ग़म की घटा छाती है,
मन की धरती हर मौसम में कुछ सिखाती है।
जो हारकर भी मुस्कान बनाए रखता है,
उसकी हिम्मत ही उसकी सच्ची कमाई कहलाती है।
सपनों को सच करने का हौसला रखना,
अपने विश्वास को हर पल जिंदा रखना।
अंधेरों से डरकर जो रुक जाते हैं,
वे सूरज की पहली किरण कैसे देख पाते हैं।
जीवन एक दीपक है, इसे जलाए रखना,
हर कठिनाई में भी उम्मीद जगाए रखना।
समय की धारा सब कुछ सिखा देती है,
बस अपने मन को सदा मजबूत बनाए रखना।
जब थक जाओ, तो थोड़ा विश्राम कर लेना,
पर अपने लक्ष्य से कभी विराम न लेना।
मेहनत की राह पर जो आगे बढ़ते हैं,
इतिहास में वे ही अपना नाम लिख देते हैं।

डॉ लखविन्दर कौर जस्सल
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

बहर - 22 , 22 , 22 , 22
क़ाफ़िया - आ
रदीफ़ - होगा

जब उसने तड़पाया होगा
वो भी दिल में रोता होगा ।

वो जो दर्द दिया करता था
उसने भी ग़म पाया होगा ।

लापरवाही जो दिखलाता
उसने धोखा खाया होगा ।

जिसने बेबस का दिल तोड़ा
ज़ख़्म उसी ने पाया होगा ।

जो खुशियों की चाहत रखता
मदद सभी की करता होगा ।

सच्ची राहों पर जो चलता
मंजिल का सुख पाता होगा ।

' राज ' हमारी बात सुनो तुम
हर इक सपना सच्चा होगा ।

डॉ राजेश कुमार जैन
श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड

बचपन की यादें।।

बचपन की यादें दिल मे बसती है,
जब हम उन यादों में खो जाते है।
हम भूलकर अपने वर्तमान को,
फिर से अतित में यूं खो जाते है।।

हम खेलते कुदते लड़ते झगड़ते,
नित गुडियां संग हम नाचते गाते।
रोकर के अपनी यूं जिद मनवाते,
कोयले से हम भी चित्र बनाते।।

मम्मा से हम डाँट भी खाते,
जब यारों संग खेलने जाते।
ना किसी से हम भी डरते,
आम चुराने यूं बाग में जाते।।

पूजा के बैग से यूं पैन छुपाते,
चॉकलेट लेकर वापिस करते।
ना कभी भी हम झुठ बोलते,
सदैव सच का साथ निभाते।।

सही गलत हम जो भी देखते,
आकर दीदी को जरूर बताते।
बैर भाव ना अपने मन में रखते,
मिल बांटकर हम साथ में खाते।।

मुन्ना राम मेघवाल ।
कोलिया,डीडवाना,राजस्थान।

-: शेष फिर :-

मैने भी ।देखा है ।
तुमने भी। देखा है।।
पथराई चिड़ियॉ।झाडियों मे ।
सिकुड़ी चीटिंया ।मिट्टी मे।।
मुर्दा छछूंदर। नालियों मे।
कुत्तों के कंकाल। सड़को पर ।।
मैंने भी ।देखा हैं ।
तुमने भी। देखा है।।
ये निर्जीव। लोथ जिनका।
जीने- मरने से।कोई संबंध नहीं।।
मरकर भी।मरना नहीं ।
हाय । उफ्फ।
जितना भी। लिखूंगा।।
इनके।बारे में ।
सदा अंतिम।पंक्ति मे।
लिखता रहूंगा।शेष फिर। ।

————

शिवओम वर्मा
फिल्म निर्माता-निर्देशक लेखक/कवि
मुंबई/मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

शीर्षक:“जीवन एक आईना है”

खुद को समझ ने का एक जरिया जो बन जाता है
अच्छाई हो या बुराई दोनों की वास्तविकता से
परीचित हमें जो कर जाता है, वह जीवन एक आईना है।।

कमियां सुधारने का एक अवसर जो दे जाता है
कठोर मन को भी कोमल कर अपनी खुशबू से
पूरे मन को महका जाता है,वह जीवन एक आईना है।।

एक अर्थ से जीवन के उच्च आत्मज्ञान से जुडा जाता है
प्रतिफल विकसित हो के मन को सच्चे विचारों से
आत्मा को धन्य कर जाता है, वह जीवन एक आईना है।।

सच्ची छवि को दिखा अपने कर्म भाग्य से जुडा जाता है
जीवन काल प्रतिबिंब बन हमारे आत्म-सम्मान से
आत्मविश्वास को निर्मल कर जाता है ,
वह जीवन एक आईना है।।....

नाम : मिश्रा पूनम सुभद्रा देवी
पता: बोईसर पालघर (महाराष्ट्र)

शख़्सियतें निशान छोड़ती हैं

किसी के साथ बुरा उतना ही करो,
कि खुद पे आए तो सहन कर सको,
बुरा ढूँढता हूँ, बुरा न मिलता कोय,
दिल देखूँ आपना मुझसे बुरा न कोय।

हमारी तमीज, तहजीब व अदब
जीवन में बहुत कुछ बोलती हैं,
कितना भी छिपाये इंसान पर,
शख्सियतें निशान छोड़ती हैं।

कहाँ मिलेंगे लोग मन मुताबिक,
ख़ुद को भी कुछ झुकना पड़ता है,
जिद की एक गाँठ जो छूट जाये,
उलझा हुआ रिश्ता सुलझ जाये।

जीवन में कलह का हल सुलह है,
अब करो या नुकसान होने के बाद,
आज के जमाने में बिना मतलब के
यहाँ तो कोई भी नहीं करता है बात।

बहुत उम्मीद न करना किसी से,
आदित्य लोग साथ कहाँ देते हैं,
जिससे जितना लगाव होता है,
वह तो सबसे गहरा घाव देते हैं।

डॉ कर्नल आदिशंकर मिश्र ‘आदित्य’, ‘विद्यावाचस्पति’
‘विद्यासागर’, लखनऊ

आत्मा का अकेलापन

चल रहें सब साथ
पर अकेला है इंसान,
बढ़ते कदम,
चलती सांसे
छुपा रहें हैं
आत्मा का अकेलापन।
विचारों का संघर्ष,
विश्वास में संदेह,
धैर्य की कमी,
बिखरते मानव मूल्य
बढ़ा रहे हैं
आत्मा का अकेलापन।
बैठे है सब मिलकर
करते बातें मुस्कराकर,
हंसते हैं पलों को
बिताकर, पर
अंदर उठती एक टीस
चुपचाप महसूस
करती हैं
आत्मा का अकेलापन।
जीवन नहीं इतना आसान,
राहें मिलती अनेक,
साथ चलतें हाथ पकड़कर,
मोड़ आते कई हज़ार
रुक कर चुनते राह,
पर फिर भी
भूल कर जातें
क्योंकि दिखता नहीं
आत्मा का अकेलापन।
सच है सब कुछ है
हमारे पास, पर जाना हैं
अंत में अकेले ही
छोड़ अंतिम सांस, पर
लेकर केवल
आत्मा का अकेलापन।

सुचेता कटारिया

ॐ जय गणेश, जय गणेश

जय गणेश मंगल कारी
वक्रतुन्ड तुम एक दन्त,
विद्या-बुद्धि देने वाले
मूषक वाहन रखने वाले।

पुकारते सदा सब आपको
गणपति-गणेश-गजानन, लम्बोदर-विघ्नहर्ता-बुद्धि दाता
रिद्धि-सिद्धि, सुख-शान्ति के दाता।

पान-फूल-मोदक चढ़ाया,
स्वीकार करो गणपति बाबा
मिलता आपके स्मरण से सुख
सिर पर आशीष सदा मिलता रहे।

लगाओ भोग प्रिय मोदक का
शिवनंदन,पूना दगडू सेठ जी,
हे लम्बोदर-अष्ट विनायक प्रभु
तन-मन सुख सम्पत्ति पावे।

सजायी आरती थाल
रोली-मोली-चंदन-वंदन से,
घर में सजे गणेश बाल रूप
कर जोड़ आरती सब कर रहे।

ॐ जय गणेश-जय गणेश।
ॐ जय गणेश,जय गणेश

डॉ. प्रभा जैन "श्री "
देहरादून

युद्ध क्यों

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध का प्रमाद है,
क्यों हुआ कैसे हुआ किसका ये प्रभाव है,

धर्म वेश जाति पाति चाहे भिन्न-भिन्न है,
खान-पान रूप रंग बोलियाँ विभिन्न हैं ।
पर सभी के चक्षुओं में अश्रु रूपी बिंदु हैं।
आत्मा कराहती है अश्रु का प्रवाह है,
क्यों हुआ कैसे हुआ ये किसका ही प्रभाव है।

सबके मन में चाह रहती शांति की सुकून की,
हरी-भरी वसुंधरा और नीले आसमान की ।
सरसराती सी पवन और मौन धूप -छांव की।
राहु -केतु क्यों बने हैं ग्रहों का प्रभाव है
युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध का प्रमाद है ।

कौन सी वो लालसा मनों में ऐसी पाल ली,
प्रेम की नदी में क्यों ही द्वेष की पतवार ली।
नाश पथ को चुन लिया क्यों ज़िंदगी बिगाड़ दी।
रूप है मनुज का पर पशुत्व सा गुबार है,
क्यों हुआ कैसे हुआ और किसका ये प्रभाव है।

हो शिकार अहम् के केवल वहम् में जी रहे,
नीर के से बुलबुले पर रहनुमा समझ रहे ।
ज़िंदगी के सत्य पथ से क्यों ही तुम भटक रहे।
चुन लिया विकृति को ये उसका ही प्रभाव है,
युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध का प्रमाद है ।

कुसुम रानी सिंघल
बल्लभगढ़, हरियाणा।

पेड़ बहुत हैं मन को भाते

देख- देख होती हैरानी।
कौन इन्हें देता है पानी।
फिर भी रहते हरे भरे हैं।
कभी किसी से, नहीं डरे हैं।
जंगल के मंगल कहलाते।
पेड़ बहुत हैं मन को भाते।।
पेड़ हमारे होते रक्षक।
हम कहलाते इनके भक्षक।
निहित स्वार्थ हित इन्हें काटते।
हरियाली को रहें छांटते।
सहनशीलता इनमें देखो
नहीं चीखते, और चिल्लाते।।

शीतल मंद बयार ये देते।
बिना स्वार्थ के प्यार ये देते।
इनकी छाया तले रहो तो
आनंदित संसार ये देते।
पर उपकार कुशल बहुतेरे
पेड़ो का जीवन हम पाते। ।

सदा समर्पण भाव ये रखते।
भला बुरा ये नहीं परखते।
सेवा हित रहते हैं तत्पर-
आनाकानी कभी न करते।
पेड़ हमे सिखलाते जीना
सदा रहो हसते- मुस्काते।

***शशि तिवारी* गोंदिया**

मानव जीवन में भक्ति निर्मला है

मानव जीवन में भक्ति निर्मला है
भक्ति से मिला पुण्य बेमिसाल है
पुण्य से मिला शक्ति है अनोखा है
शक्ति से मिला मुक्ति अद्वितीय है।

भक्ति से आत्म बल बढ़ता है
भक्ति से विश्वास दृढ़ बनता है
भक्ति से आत्म नियंत्रण होता है
भक्ति से अच्छी गुण पैदा होता है

भक्ति से दिल निर्मल होता है
दिमाग में शांत पैदा होता है
उत्साह से कार्यरत करता है
भक्ति मार्ग पर जाना अवश्य है।

सोचने की शक्ति बढ़ती है
चरित्र में बदलाव होता है
आध्यात्मिक शक्ति मिलती है
भक्ति भाव से आदर्श बनता है।

भक्ति से निष्ठा नियम बढ़ता है
इसे कर्तव्य दीक्षा दृढ़ बनता है
सच्चाई से जीवन बिताता है
मानवत्व का भाव पहचानता है।

श्रीनिवास यन, साहित्यकार
आंध्रप्रदेश

सुबह

आज की सुबह फिर एक नई उमंग लाई है,
ये हमारे लिए एक नई उम्मीद लाई है,
हुआ है असर ऐसा यादों का तेरी,
ये अपने संग हवा में तेरी परछाई लाई है।

परछाई को देख तुम्हारे चेहरे पर मेरे,
एक प्यारी सी मुस्कान लाई है।
ये मीठी सी हवा मेरे लिए प्यार का
तुम्हारा मीठा पैगाम लाई है।

बैठी हूं में आंखे बंद कर अपनी,
ये हवा अपने संग तुम्हारा स्पर्श लाई है,
आंखो में मेरे कुछ ख्वाब सजाई है,
ऐसा ये मेरे लिए तुम्हारा पैगाम लाई है।

सूरज की चमचमाती किरणे मेरे लिए
तुम्हारे प्रेम की आभा लाई है...
पक्षियों का कलरव मेरे लिए,
तुम्हारे एहसासों का पैगाम लाई है।

बंद आंखों को मेरी तेरे प्यार की महक ने
होले से स्पर्श किया। जैसे कोई बीता लम्हा
उसने मेरे करीब किया। ये भीनी - भीनी सी
प्यारी सुबह मेरे लिए तुम्हारे प्रेम की कशिश लाई है।

रुचिका नीमा

हरी-भरी धरती का सुंदर ये श्रृंगार

हरी-भरी धरती का सुंदर ये श्रृंगार,
पेड़-पौधे, नदियाँ हैं जीवन का आधार।
नीला-नीला गगन, शीतल पवन का स्पर्श,
प्रकृति का हर रूप करता मन को हर्ष।
चिड़ियों की चहचहाहट, फूलों की मुस्कान,
इनसे ही तो खिलता जीवन का हर अरमान।
नदियों का कल-कल, झरनों की मधुर तान,
इनसे ही बसता है जीवन का सम्मान।
लेकिन मानव ने जब स्वार्थ को अपनाया,
प्रकृति के सौंदर्य को धीरे-धीरे मिटाया।
पेड़ों की कटाई, प्रदूषण का जाल,
धरती माँ हो रही है दिन-प्रतिदिन बेहाल।
आओ मिलकर करें हम ये संकल्प महान,
बचाएँगे पर्यावरण, बढ़ाएँगे उसका मान।
पेड़ लगाएंगे, जल को करेंगे संजोना,
स्वच्छ बनाएंगे धरती का हर कोना।
तभी मुस्कुराएगी ये धरती हमारी,
खुशहाल होगी जीवन की हर क्यारी।
प्रकृति का सम्मान ही सच्चा है उपहार,
यही है जीवन का सबसे बड़ा आधार।

पंकज पाण्डेय शिक्षक एवं लेखक
गोरखपुर

विषय देशभक्ति

उठो आज बीरो , जगो देश प्रेमी।
वतन का तराना बदलना पड़ेगा।।
उठो शेर हो तुम दहाड़ो जगत में।
मुकद्दर भारत का बदलना पड़ेगा।।
1/
बदल दो लो अपने को, तुम सबसे पहले,
बनो वीर शिवाजी सुभाष चंद्र जैसे।
तुम्हें देश हित लिए, कर में दुनाली,
वीरों का बाना, पहनना पड़ेगा।।
उठो शेर हो तुम----------
2/
उठो माता बहनों, बहुत तुम भी सोलीं,
बनो सीता अनुसूइया, मेरी माता भोलीं।
तुम्हें देश हित लिए कर में दुधारी,
झांसी की रानी बनना पड़ेगा।।
उठो शेर होतुम----------

3/
उठो मेरे भारत के प्यारे प्यारे बच्चे,
करो देश की सेवा बने रहो सच्चे।
तुम्हें देश हित बांधे, सिर पर कफन को,
फतहसिंह जोरावर बनना पड़ेगा।।
उठो शेर हो तुम----------

मनोज मंजुल ओज कवि कासगंज जनपद कासगंज
उत्तर प्रदेश

अंतस से संवाद

अंतस की गहराइयों का अवसाद हटाइए।
अंतस से जो हर रात हो, वो संवाद चाहिए।
भीड़ में खोकर भी खुद को तलाशूँ हर रोज़,
मुझको मेरे ही भीतर का दिलशाद चाहिए।
सच की जो आवाज़ है, दबती क्यों हर बार,
दिल से निकले बेधड़क, ऐसा उन्माद चाहिए।
झूठ के साए में कब तक रहते हम बेख़बर,
रौशनी सच हक़ की मिले, वो प्रसाद चाहिए!
कभी अंतस से पूछूँ, कभी रूह से बात करूँ,
हर इक बात के पीछे असल याद चाहिए।
ज़िंदगी थक गई निभाते हुए रिश्तों के मुखौटे,
जीवन में सच के रिश्ते का ही साथ चाहिए।
अंतस में सन्नाटा गहरा,बाहर कोलाहल बहुत,
जीवन की तन्हाई में खुद से इरशाद चाहिए।
अंदर से खुशी लगती नहीं,दुख है बेअसर,
ज़िंदगी के हर काम में इक इम्तियाज़ चाहिए।
वक़्त के साथ बदलती हैं इंसानी आदतें,
अब ज़िंदगी की सोच में इंक़लाब चाहिए।
ये सफ़र जीवन का यूँ ही नहीं कट पाएगा,
रूह को रूह से मिलने का जवाज़ चाहिए।
ये ज़िंदगी महज़ है दिखावे की है शरीफ़,
अंतस सिर्फ़ रूह वाद करे, वो संवाद चाहिए!

*** डॉ शरीफ़ ख़ान**

महिमा राम नाम की- मुक्तक

सागर में डूबने लगा जब पत्थर,
शीला शैल जो डालते थे बंदर।
सबके सब परेशान से दिखते थे,
हनुमंत किए हैरान राम लिखकर।।०१।।

राम नाम की महिमा को समझाया,
डूबता हुआ पत्थर था तैराया।
भला कैसे डूबोता पानी उसे,
जिस पत्थर पर राम नाम लिखवाया।।०२।।

जिसने राम नाम का रसपान किया,
आठों प्रहर हरि का यशगान गाया।
और करते रहा काम सदा अपना,
वह भवसागर से पार शीघ्र पाया।।०३।।

भजते प्रभु नाम करते रहते ध्यान,
रहते हैं निश्छल भी वही इंसान।
किसी विपत्ति में है घबराते नहीं,
उनको हीं कभी मिलते हैं भगवान।।०४।।

राम नाम जपने की महिमा न्यारी,
सहज मिल जाते ब्रह्म भव भय हारी।
डाकू रत्नाकर जपा जब राम,
बाल्मीकि से जानती दुनिया सारी।।०५।।

रचयिता:- राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

मिट्टी की खुशबू

बड़ी ही सोंधी सी खुशबू है, मेरे देश की मिट्टी में,
कईयों की कुर्बानियों का लहू मिला है इस धरती में।
इतिहास गवाह है—आजादी के लिए जो कुर्बान हो गए,
एक से बढ़कर एक वीर अपने प्राणों की आहुति दे गए।

बड़ी ही सोंधी सी खुशबू है, मेरे देश की मिट्टी में,
वीरगाथाओं की कहानियाँ इसका इतिहास सुनाती हैं,
वेद, योग और सांख्य का वर्णन इस प्रकृति में,
सदाचार से आचरण करना हमें सिखाती हैं।।

बड़ी ही सोंधी सी खुशबू है, मेरे देश की मिट्टी में,
यह धरती श्रीराम की, यह भूमि श्रीकृष्ण की,
गंगा, यमुना और सरस्वती का पावन संगम इसमें,
चारों धाम, बारह ज्योतिर्लिंग बसे हैं इसकी गोद में।।

बड़ी ही सोंधी सी खुशबू है, मेरे देश की मिट्टी में,
भाषाओं की विविधता, पहनावे भी भिन्न-भिन्न हैं,
फिर भी विविधता में एकता का संदेश ये फैलाती है,
सारे संसार में इस मिट्टी ने अपनी सुंदर पहचान बनाई है।।

बड़ी ही सोंधी सी खुशबू है, मेरे देश की मिट्टी में,
इसकी पैदावार की महक दुनिया में फैल जाती है,
सोना उगले खेत यहाँ, हरियाली लहराती है,

किसानों की मेहनत से धरती मुस्कुराती है,
अन्नपूर्णा बनकर ये सबका पेट भर जाती है,
मेरे देश की मिट्टी अपनी खुशबू से जग को महकाती है।।

— डॉ. स्वाती जाजू
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

शीर्षक - ईश्वर की कृति

मानव जीवन अनमोल, इसे यूं हीं गंवाया है।
चौरासी लाख योनियों के बाद ये तन पाया है।
माटी का पुतला है ये,माटी में मिल जायेगा ।
ये जीवन किराये का,खाली कर जायेगा।
आंखें दो, पर सपने पूरे आसमां सजाने को।
हाथ दो, पर मेहनत से तकदीर बनाने को।
पांव दो, पर रास्ते खुद तय कर पाने को।
दिल एक, पर उसमें सारा संसार बसाने को।
किसी की आंख का आँसू बनो तो जीवन शून्य है।
साथ जायेगा केवल कर्म किये जो पुण्य है ।
भूखे को भोजन खिलाओ,प्यासे को पानी।
यही असली कमाई रे मन,बाकी सब बेमानी।
चार दिन की चटक चांदनी, फिर अंधेरी रात।
इसीलिए जीवन में बांटो, प्रेम की सौगात।
जिनके लिए धन जोड़े,पराया हो जाता है।
जिनको पराया समझा वो कंधा दे जाता है।
हंसो, हंसाओ, रिश्ते समेटो,घाव नहीं देना।
हिम्मत से गिरे को उठाओ,हाथ सही देना।
मानव बनो, मानवता का धर्म अपना लो।
जीवन है अनमोल इसे, उत्सव सा मना लो।
ईश्वर की कृति अनुपम, तुम खुद को पहचानो।
लौटकर नही आएगा,ये तन कीमती मानो।

चन्द्रकला शर्मा प्रधान पाठक बेमेतरा छत्तीसगढ़

आशा ताई को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित

आशा ताई पर एक कविता: 'सुरों की शहज़ादी'

दीनानाथ की बिटिया, सांगली की सुबह बनकर आई,
नौ बरस की उमर में ही, पिता की धुन पर थिरकाई।
'चला चला नव बाळा' से, सफर जो शुरू हुआ,
ग्यारह हज़ार नग़मों तक, वो कारवां बढ़ता गया।

जब 'पिया तू अब तो आजा' गाया, शर्म से मजरूह भागे,
पर हेलन के कदमों में, वो गीत अमर हो जागे।
'दम मारो दम' का नशा, जवानी को बहका गया,
'इन आंखों की मस्ती के', हज़ारों दिल धड़का गया।

'झुमका गिरा रे' जब गूंजा, बरेली बाज़ार झूमा,
'चुरा लिया है तुमने जो दिल को', हर आशिक़ ने चूमा।
'ये मेरा दिल यार का दीवाना', डॉन की महफ़िल सजी,
'ओ मेरे सोना रे', तीसरी मंज़िल गूंजी।
'अभी ना जाओ छोड़ कर', दिल आज भी रोकता है,
'ज़रा सा झूम लूं मैं', DDLJ संग आज भी लोकता है।
'रात अकेली है' से लेकर, 'दिल चीज़ क्या है' तक,
हर जज़्बात को सुर दिए, हर दर्द को राहत तक।

कैबरे की चमक हो या, 'अब के बरस' का विरह,
'मेरा कुछ सामान' में, यादों का वो शहर।
पंचम के संग जोड़ी ऐसी, सुर-ताल की बरसात,
बोल्ड गीतों की रानी बोलीं - 'मुझमें ही ये बात'।

पद्म विभूषण से दमके, दादा साहब फाल्के पाया,
गिनीज़ की किताब में, हिन्द का मान बढ़ाया।
92 बसंत देख चुकीं, फिर भी आवाज़ जवान,
आशा जी, आप हो सुरों का, कभी न बुझने वाला उजियारा।

आशा भोंसले जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

डॉ नीलू सक्सेना कस्तूरी

दुल्हन
चार मुक्तक, मात्रा भार -30

कर सोलह शृंगार सखी साजन की राह निहारूँ मैं।
नूपुर बिंदिया नथनी कजरा,अपना रूप निखारूँ मैं।
पीत पुष्प-सा भोलापन है मैं तो हूॅं मासूम कली।
अपने पिय की दुल्हन हूँ अब अपनी नज़र उतारूँ मैं।

सात भाँवरे लेकर अपने साजन के घर आज चली।
प्रियतम के घर फूल बनी माँ के आँगन की सौम्य कली।।
घूँघट में दुलहन का मुखड़ा देख सलोने पिया हँसे।
आज लजाई- सी बैठी है नाजों से जो बढ़ी- पली।।

रचती हाथ हिना दुल्हन का मनभावन शृंगार सजे।
छम- छम- आँगन में पायल की रुनझुन सारी शाम बजे।।
घर की सारी ज़िम्मेदारी सहज भाव से अपनाती।
सबके सुख के लिए स्वयं के सुख का भी वह भाग तजे।।

वीर सैनिकों आज तिरंगे में वधुओं की माँग ढली।
तीन रंग मे ही ढलकर अब दुल्हन की हर साँस चली।।
तीन रंग का जोड़ा पहने दुल्हन का शृंगार हुआ।
आज धरा पर तीन रंग की हवन कुण्ड में दुआ फली।।

विनीता निर्झर

विषय_बचपन

हम खेलों में दिल को हंसाया करते थे
बिन फोन के जीवन बिताया करते थे
फुल के बागीचे वृक्ष होता मित्र हमारा
तितलियों से हम बातें जताया करते थे

बरसात में किश्ती हम बनाया करते थे
उसमें मकोड़े चालाक लगाया करते थे
जब कभी होता मन उदास सा हमारा
बचपन में दिल ऐसे बहलाया करते थे

रेत मिट्टी के घर बना सजाया करते थे
फिर घर वो तोड शोर मचाया करते थे
दिन मस्ती भरी में चला जाता हमारा
बचपन में रस्सी लट्टु गुंजाया करते थे

किसी नलकूप पे हम नहाया करते थे
भरी दुपहरी हम पानी बहाया करते थे
लिखता है बिलाल कुछ बचपनी यादें
जब बड़ों कि दुआंए हम पाया करते थे !!

भरी दुपहरी हम खेत में जाया करते थे
खेत हमको बडी दुर से भाया करते थे
टोकरे में खाना ले घर से आया करते थे
लस्सी चटनी चुपडी रोटी लाया करते थे

मजा़ आ जाता खेतों में खाया करते थे
ठंडी ठंडी हवा की नींद पाया करते थे
हरी घास पे बैठी तितलीं उठाया करते थे
तोडी़ सी बातें कर फिर उड़ाया करते थे

वो खेत संग अपने हमें खिलाया करते थे
हमारे दिल में यादें अपनी बसाया करते थे
यादें समेंटे बिलाल कदम बढा़या करते थे
कलम उठा हम कविता बनाया करते थे

लेखक_ चौधरी बिलाल
जिला सहारनपुर उत्तर प्रदेश

अब खुद ही गिर जाओ तुम

अब खुद ही गिर जाओ तुम,
टूट कर जमीं पर।
पत्थर मारने वाला बचपन,
मोबाइल में व्यस्त है॥

अच्छी थी पगडंडी अपनी।
सड़कों पर तो जाम बहुत है॥
फुर्र हो गई फुर्सत अब तो।
सबके पास काम बहुत है॥

नहीं जरूरत बूढों की अब।
हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है॥
उजड़ गए सब बाग बगीचे।
दो गमलों में शान बहुत है॥

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं।
कहते हैं, जुकाम बहुत है॥
पीते हैं जब चाय, तब कहीं।
कहते हैं, आराम बहुत है॥

बंद हो गई चिट्ठी, पत्री।
व्हाट्सएप पर पैगाम बहुत है॥
आदी हैं ए.सी. के इतने।
कहते बाहर गर्मी बहुत है॥

झुके-झुके स्कूली बच्चे।
बस्तों में सामान बहुत है॥
नही बचे कोई सम्बन्धी।
अकड, ऐंठ, अहसान बहुत है॥

सुविधाओं का ढेर लगा है।
पर इंसान परेशान बहुत है॥

नाम: टी.आदि लक्ष्मी
आंध्र प्रदेश।

शीर्षक:तेरी यादों के सहारे

दिल की गहराइयों में तुम्हारी याद
इसी के सहारे जी रही हूं मैं आबाद
यादों में रहकर बनाए हो जीवन सुखद
कान्हा तुम्हें ही करती मेरा दिल याद
आशा है जीना मरना अब तेरी ही याद में हो

सुबह का सूर्योदय होता तेरी याद में
शाम रोशनी ढलती है तेरी याद में
रात का चंद्र की चांदनी होती तेरी याद में
मेरी हर सांस की पहचान तेरी याद में
चलती जीवन मेरे तेरी ही याद में।

निराशमय समय में आशा का किरण
सुखमय जीवन में प्रसन्नता का कारण
दर्द भरे वक्त में धीरज दे रक्षण
दिल में रहकर मेरे करे तुम संरक्षण
मैं ने दिल के हर कोने में तुम्हे करली धारण।

बचपन की यादों का जीवन

बचपन तेरी यादों के सहारे जी लेता हूँ मैं।
बीते हुए उन पलों को फिर से सी लेता हूँ मैं।।
मिट्टी की खुशबू, वो कागज़ की कश्ती।
बारिश में भीगना, वो हँसी थी सस्ती।।

न चिंता थी कोई, न कोई डर था।
हर दिन जैसे एक नया सफर था।।
खेल-खिलौनों में दुनिया बसती थी।
छोटी-सी बात पर आँखें हँसती थी।।

माँ की वो डाँट भी सबको प्यारी लगती थी।
पापा की बातों से जिम्मेदारी जगती थी।।
दोस्तों संग गलियों में शोर मचाना।
छुपन-छुपाई में खुद को भुलाना।।

स्कूल की घंटी, वो छुट्टी का इंतज़ार।
टिफिन में बाँटना, था सबसे बड़ा प्यार।।
न कोई लालच, न था कोई दिखावा।
दिल था साफ, न था कोई बनावा।।

आज भी जब यादें दस्तक देती हैं।
आँखों में हल्की नमी भर देती हैं।।
बचपन, तू लौट आ बस एक बार।
तेरे बिन, ये जीवन लगता है बेकार।।

तेरी हँसी में ही तो था सारा यह संसार।
तू ही था जीवन का सबसे सुंदर उपहार।।

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा

मानव यूं बदल रहा नव वर्ष ज्यों बदल गया !

मानव यूं बदल रहा, नव वर्ष ज्यों बदल गया !
मिटी कई उम्मीदें, अनचाहा कितना हो गया !
कई आशाएँ न पूरी हुई, मन यूं कोसों दूर हुआ !
मानव का मनमुटाव बढ़ा, अपनों से दूर हुआ !

मंच पर तो यूं ही प्रशंसा भूरी-भूरी हुई !
पर बाहर तो अकसर खींचातानी हुई !
किसी को नीचा दिखाने में ना देर हुई !
ऐसे ही इंसानियत कितनी शर्मसार हुई !

कैंची के बदले ज्यों काम आती सुई !
ये जीवन ऐसे जियो हवा में तैरती रुई !
क्यों आपस के सम्बन्धों में दरार हुई !
छोटी-छोटी बातों में क्यों तकरार हुई !

मानव की दृष्टि समय के साथ बदल गई !
मानव का रूख देख पूरी सृष्टि दहल गई !
परिवार यूं टूट रहे आँखें बड़ी ही नम हुई !
दिन-महीने-साल गुजरते दूरी न कम हुई !

ओ जग के रखवाले अब तो देरी हो गई !
राह तुम्हारी तकते सारी दुनिया सो गई !
'ब्रिजेश' की नम आँखें चिंता में खो गई !
तेज आँधी में बुझते दीये की ज्यों लौ गई !

- डॉ. बी. जे. पटेल 'ब्रिजेश'
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग

शीर्षक- उदारता का भाव

उदारता का भाव मन में पले ,
दुश्मन भी आ कर लगे गले ।
मन की बगिया में पुष्प खिले ,
लगे सारे जहाँ पर दीप जले ।।

उदारता का भाव शान्ति लाती हैं ,
क्रोध कपट द्वेष मन से भगाती हैं ।
आपस की वैर दूर कराती हैं ,
नव पल्लव उम्मीद जगाती हैं ।।

उदारता का भाव प्रेम बढ़ता हैं ,
टूटे हुए मन पर आश जगाता हैं ।
नयनन पर मुस्कान भरता हैं ,
खुशियों से मन चहकने लगता हैं।।

उदारता का भाव महान बनाता हैं ,
दान दया शालीनता सिखाता हैं ।
दूसरों से दुःख बांटना सिखाता हैं ,
मेल -मिलाप एक दूजे का साथ निभाता हैं।।

उदारता का भाव में ईश बैठतें हैं,
कलुषता को भी सज्जन बनातें हैं ।
अंधेरों में उजाला रौशन लातें हैं,
उदार हृदय जीने का मर्म सिखातें हैं ।

लतेलिन लता प्रधान चांपा जांजगीर छत्तीसगढ़

कृष्ण-सुदामा की सच्ची मित्रता

गोकुल की गलियों में पली वो प्रीत।
कृष्ण-सुदामा की थी वो सच्ची मीत।।
एक था राजा, एक था विप्र गरीब।
फिर भी न टूट सका उनका नसीब।।

संग-संग खेले, संग में पढ़े थे।
हर सुख-दुख में साथ खड़े थे।।
समय ने ली जब अलग राह।
परंतु दिल में रही वही चाह।।

सुदामा थे निर्धन, जीवन था कठिन।
फिर भी न बदला उनका निर्मल मन।।
पत्नी ने कहा—मित्र से मिल आओ।
अपने दुख का कुछ समाधान पाओ।।

द्वारिका पहुँचे जब सुदामा लजाए।
श्रीकृष्ण दौड़कर उन्हें गले लगाए।।
राजा होकर भी, भूले न अपनी यारी।
देख सुदामा की दशा, आँखें हुईं भारी।।

चावल की पोटली भी प्रेम से खाई।
मित्रता की सच्ची मिसाल दिखाई।।
बिना कहे ही सब कुछ जान लिया।
सुदामा का जीवन धन से भर दिया।।
सच्ची मित्रता कृष्ण-सुदामा की है अमर कहानी।
मानव को है सिखाती मित्रता की सच्ची निशानी।।

श्रीमती रुकमणी शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय

शीर्षक : विषाक्त बंधनों से मुक्ति

विष बनकर जो संबंध जीवन में उतर आए,
उनसे दूरी ही मन को फिर से मुस्काए।
आत्मसम्मान की ज्योति जब भीतर जलती है,
हर अंधियारा बंधन स्वतः ही मिट जाए॥
"ना" कहना भी साहस का उज्ज्वल रूप है,
स्वत्व की रक्षा ही जीवन का स्वरूप है।
जो मौन रहकर भी पीड़ा को बढ़ाता जाए,
ऐसे संबंधों का त्याग ही अनुपम रूप है॥
अपराध-बोध का भार न मन पर धरो,
अपने ही अस्तित्व से न यूँ तुम डरो।
शांति जहाँ मिले वही पथ अपनाओ,
विषमय छाया से बाहर दृढ़ कदम धरो॥
साथ वही जो कठिन घड़ी में साथ निभाए,
गिरते मन को फिर से उठना सिखाए।
झूठे स्नेह से उत्तम है सत्य एकांत,
जो आत्मा को निर्मल उजियारा दिलाए॥
निर्भरता की जंजीरें जब टूट जाती हैं,

स्वावलंबन की राहें तब खुल जाती हैं।
धैर्य और विश्वास संग चल पड़ें यदि,
जीवन की हर बाधाएँ स्वयं झुक जाती हैं॥
उठो, स्वयं का हाथ स्वयं थाम लो,
विषाक्त बंधनों से मुक्त प्रभात पाओ॥

रचनाकार : सतीश कुमार भट्ट रुद्रप्रयाग (उत्तराखंड)

विषय - भीम राव अंबेडकर

पहले अज्ञानता की जंजीरों को तोड़ने के लिए
उन्होंने कलम उठाई,
फिर उसी कलम से पूरे समाज को
अधिकारों की रोशनी दिखाई।

जीवन के कुछ गूढ़ सत्य
बाबा साहेब ने हमें सिखाए—
कि शिक्षा ही सबसे बड़ा हथियार है,
और संविधान ही हमारा सच्चा आधार है।

कभी भेदभाव की धूप में जलते लोग,
आज समानता की छाँव में खड़े हैं,
ये कोई चमत्कार नहीं,
ये डॉ. भीमराव अम्बेडकर के
संघर्षों के फल बड़े हैं।

स्कूल की चौखट पर जब कदम रखा,
तो अपमान की दीवारें सामने थीं,
लेकिन हौसलों की ऊँचाई ऐसी थी,
कि हर मुश्किल उनके आगे छोटी थी।

विद्या को उन्होंने अपना धर्म बनाया,
अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाया,
कलम से लिखकर उन्होंने ऐसा इतिहास,
हर वंचित को उसका हक दिलाया।
आज हम स्वतंत्र हैं, समान हैं,
तो ये उनकी ही मेहनत का परिणाम है,

हर दिल में बसता है उनका संघर्ष,
हर जुबां पर उनका ही नाम है।
हम भले ही अलग-अलग राहों में हों,
पर उनका संदेश हमें जोड़ता है,

शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो—
यही मंत्र हमें आगे बढ़ाता है।
आज अम्बेडकर जयंती पर
बस इतना सा प्रण करें,

भेदभाव को छोड़कर हम सब
मानवता का पथ धारण करें।

नमन उस महान आत्मा को
जिसने हमें जीने का अधिकार सिखाया।

डॉ पंकज कुमार बर्मन,कटनी, मध्यप्रदेश

भाग्य विधाता

संविधान निर्माण के, प्रमुख मूलाधार।
भाग्यविधाता दीनहत, श्रोता दलित पुकार।।
शिक्षित बन रह संगठित, नियमित कर संघर्ष।
तभी कटेगी व्याधियाँ, होगा जग उत्कर्ष।।
मानववादी बौद्धिक, समतामूलक राज।
पलना-बढ़ना साथ में, ऐसा रचे समाज।।
सदियों का शोषण रुका, पैशाचिक व्यभिचार।
जागरूक जग जागरण, बदल दिया व्यवहार।।
वैमनस्य कल काटकर, आप! रचे इतिहास।
अन्तर्द्वन्द्व निषेध हो, मात भारती आस।।
जाति जंग कुछ कम हुई, धर्म मोर्चे शेष।
काश कोई हो आप सा, रचे शान्ति परिवेश।।
अन्दर-बाहर युद्ध में, नहीं कोई महफूज।
मारो-बाँटो-छीन लो, यही चतुर्दिक गूँज।।
ऐसे में कैसे भला, पले-बढ़े परिवार।
गर्दन पर जिसके रखी, द्वेष-वैर-तलवार।।
सम्प्रति विभु कुछ कीजिए, असमंजस में देश।
विश्वपटल रणरंग में, डूबा हुआ विशेष।।
मानवता का आधुनिक, सर्वोपरि उपहास।
चाहे जो हो माध्यम, रोकें महाविनाश।।
भव्य जयंती आपकी, निष्ठा का प्रमाण।
बहुजन के हृदय बसे, भारत माँ के प्राण!!

रचनाकार : डॉ० मनीराम वर्मा
गुवाँव (पालीपट्टी), चाँदपुर, टाण्डा
अम्बेडकरनगर

मर-मर कर ना यूं जिया कर !

साँसें कितनी बची है तेरी
मर-मर कर ना यूं जिया कर !
यहाँ खाली झोली है तेरी
सबसे उधार ना यूं लिया कर !

प्यासी-पथराई-सी आँखें तेरी
जहां से भीख ना लिया कर!
नाव मझधार फंसी है तेरी
प्रभु को मन्नत तू किया कर!

रात अंधेरा सुबह उजाला
जीवन की है यही रीत!
गम गहरा अथाह ज्वाला
बढ़ा ले तू प्रभु से प्रीत!

कंटक भरा पथ पथरीला
गा ले खुशी के तू गीत!
भाग्य तेरा होगा चमकीला
प्रभु-नाम से होगी तेरी जीत!

तेरे कर्म ही तुझे काम आएंगे
राहों में फूल बिछेंगे चहुओर!
उदासी के काले बादल हटेंगे
ओज से तम मिटेगा घनघोर!

आर्तनाद से पत्थर पिघलेंगे
मिलेगा 'प्रिया' तुझको छोर!

प्रियांशी पटेल 'प्रिया'
हिंदी छात्रा, एम.ए. सेमेस्टर-4
हिंदी भवन, सौराष्ट्र विश्व विद्यालय, राजकोट, गुजरात

हम प्यासे पंछी दया करो

दया करो, दया करो,हम प्यासे पंछी दया करो।
रोज सवेरे खुली जगह पर, एक बर्तन पानी धरा करो।
दया करो,दया करो,हम बेजुबान प्राणी दया करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी हम,बस एक कटोरा भरा करो।

कम या ज्यादा जो मिले हम, अपना गुजारा कर लेंगे।
उड़ते भटकते राहों में, जो भी दाना मिलेगा चुग लेंगे।
सिर्फ खाने से ही कैसे जीयेंगे,कोई,ऐसा भी सोचा करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी हम, बस एक कटोरा भरा करो।

सूखे पड़े हैं नदी नाले, जाएँ तो जाएँ कहांँ अब हम।
एक भरोसा इन्सान ही तेरा,प्यास से निकल रहा है दम।
सिर्फ तेरे पास ही तो है पानी, तुम ही दयालु दया करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी हम,बस एक कटोरा भरा करो।

इस अगन सी गरमी में, पशु-पक्षी कितने ही तड़प रहे।
बिना पानी के तड़प-तड़प कर कितने ही तो मर भी गये।
जिन्दा बचे हैं जो भी जीव 'मुथा', उनकी जान बक्शा करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी हम,बस एक कटोरा भरा करो।

कवि छगनलाल मुथा-सान्डेराव
मुम्बई

मिलेंगे

कभी तो इस भीड़ से अलग हो के मिलेंगे,
हम अपने ही ख्वाबों में सुकून से मिलेंगे।।
ना कोई सवाल होगा, ना कोई सफाई,
बस खामोश निगाहों के सिलसिले से मिलेंगे।।

जो बात अधूरी रह गई थी लबों पे,
उसे दिल की गहराइयों से कह के मिलेंगे।।
रातें जो तन्हा थीं तेरे बिना हर पल,
उन्हीं रातों को सुबह बना के मिलेंगे।।

तेरे नाम से धड़कता है जो दिल अब भी,
उसी धड़कन की आवाज़ बन के मिलेंगे।।
कभी चाँद की ठंडक में, कभी धूप की गर्मी में,
हम हर मौसम का रंग बन के मिलेंगे।।

तेरी एक झलक को तरसी थीं जो ये आँखें,
अब तुझे सामने बिठा के मिलेंगे।।
ना फासले रोकेंगे, ना हालात झुकाएँगे,
हम हर बंदिश को तोड़ के मिलेंगे।।

जो दर्द मिला था तुझसे बिछड़ कर हमें,
उसी दर्द को मुस्कान बना के मिलेंगे।।

मोहब्बत अब इम्तिहान नहीं, इबादत बन गई है,
हम उसी सच्चाई में ढल के मिलेंगे।।

अगर किस्मत ने फिर दूरी लिख भी दी,
तो हम अपनी जिद से उसे बदल के मिलेंगे।।

मयंक कुमार (पटना, बिहार)

बाबा भीम राव अम्बेडकर

दलितों के उद्धार हेतु किए अथक प्रयास ।
पर अगड़ी जाति के स्नेह को सदा किया स्वीकार।
ब्राह्मण थे गुरु उनके जाति नाम
स्वीकार किया।
अर्धांगिनी भी थी ब्राह्मण पुत्री
उसको भी अंगीकार किया।
महाराज गायकवाड़ ने भेजा लंदन कानून की शिक्षा पाने को
पूना समझौता स्वीकार किया,
बापू के प्राण बचाने को
संविधान सभा का गठन हुआ
150 सदस्यों के बने अध्यक्ष
डॉ राजेंद्र प्रसाद के सहयोग
से संविधान को सौंप दिया प्रत्यक्ष
देश ने 26 जनवरी 50 को संविधान को किया हमने स्वीकार।
डॉ अम्बेडकर की देश में हो गईं
जय जय कार
कानून मंत्री बने देश में गणतंत्र
राज्य चलाने को
पर अपने सिद्धांत के हित में
त्याग दिया पद अलग दल बनाने को
आज जयंती है अम्बेडकर की
श्रद्धा पूर्वक करे नमन
गलत का विरोध करने को अर्पण था उनका जीवन ।
मौलिक और स्वरचित
शैलेन्द्र कुमार अम्बष्ट वाराणसी।

विषय डॉ. भीम राव अम्बेडकर जयंती

डॉ.भीमराव अम्बेडकर

अप्रैल 14,1891 म.प्र.के मऊ ग्राम में।
जन्मे रामजी भीमा के चौदवी संतान।।
ऊंचनीच जातिभेद से वृहत संघर्ष कर।
लिया देश के संविधान निर्माता सम्मान।।

पिता,रामजी करते थे सैनिक में काम।
रहे सदा सरल विनम्र भाव के भंडार ।।
थी माता भीमाबाई विभूति धर्म महान।
दिए अम्बेडकर को धर्म रूप संस्कार।।

बाबा का धर्म जनसेवा कर्म मानवता ।
अध्यक्ष थे समूह संविधान निर्माता के।।
आजादी, स्वाभिमान का महत्व सिखाते ।
दलित शोषित समाज के भाग्य विधाता थे।।

किये संघर्ष जातिवर्ण की जंजीरें तोड़ने।
और देने महिलाओं को सम अधिकार ।।
राष्ट्रनिर्माण में पूर्ण भागीदार बनकर।
हर चुनौती को किया सहर्ष स्वीकार।।

हुए बहुत बार आहत शब्द मार से ।
पर चुप न बैठा शब्दों से हार मान के।।
हर विपत्ति पर किया सामना डटकर।
बनकर बाबासाहेब उभरा चमककर।।

रहे प्रज्ज्वलित हृदय में दीपक बनकर।
और सदा अमर रहे बाबा का सम्मान।।
किये कठिन संघर्ष स्वाभिमान सिखाने ।
धरती से अम्बर तक हो सदा गुणगान।।

बसंत श्रीवास "वसंत" (नरगोड़ा)
रामकृष्ण मिशन आश्रम नारायणपुर
छत्तीसगढ़

ज़िन्दगी

हरियाली के इस सफर में,
घास के सूखे तिनके जैसी ,
उड़ी जा रही है ये ज़िन्दगी।।

हवाओं के थपेड़ों के संग,
क्यों बेवजह अनमनी सी,
मुड़ी जा रही है ये ज़िन्दगी।।

न मंजिल का पता इसको,
न ही रास्ते का कोई इल्म है,
चली जा रही है ये ज़िन्दगी ।।

अपने मुरझाए हुए जीवन पे,
चारों ओर हरियाली लपेट के,
हरी दिख रही है ये ज़िन्दगी।।

मधुलिका स्वरूप
बहराइच

शीर्षक: तू राम भजन कर ले

हालात अगर, बन जाए जहर,
और अपना ही बस ना चले।
जीवन का सफर, ना जाए ठहर,
तू राम भजन कर ले।

सुमिरन से राम प्रभु के,
मन का अंधेरा भागे।
जीवन ये सरल हो जाए,
जब लगन राम से लागे।

संतोष मिले, मन शांत रहे,
विपदा जीवन की टले।
जीवन का सफर, ना जाए ठहर,
तू राम भजन कर ले।

दुनिया एक माया नगरी,
इसमें न कहीं खो जाए।
दो दिन की है ज़िन्दगानी,
नहीं देर कहीं हो जाए।

अफसोस न हो, कहीं अंत समय,
जब प्राण तेरे निकले।
जीवन का सफर, ना जाए ठहर,
तू राम भजन कर ले।

अर्चना श्रीवास्तव
नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

शीर्षक: जल रहा है सभी का नशेमन

जल रहा है सभी का नशेमन, शख्स कोई सलामत नहीं है।
उसपे महंगाई का दौर देखो, क्या ये जनता की आफत नहीं है?

सच की आवाज जब तुम उठाते, तुमको धमकाते हर आते जाते।
घर में डर के दुबक बैठ जाना, ये कहीं की शराफत नहीं है।

लोग कुछ हैं जो कहते हैं करते, और किसी से भी बिल्कुल न डरते।
कथनी करनी अगर एक है तो, तुमको आती सियासत नहीं है।

धर्म के नाम पर तोड़ते हो, क्यों नहीं तुम हमें जोड़ते हो?
देश को बाँटना चाहते हो, ये तुम्हारी रियासत नहीं है।

माँ पिता ने ये जीवन संवारा, और गुरु ने दिया ज्ञान सारा।
इनकी पूजा से बढ़कर के बंदे, इस जहां में इबादत नहीं है।

हर किसी पर नजर तुम न डालो, अपने मन को ज़रा तुम संभालो।
जो पराए का धन चाहता है, उसकी किस्मत में बरकत नहीं है।

तेरी खुशियों में नजदीक आता, दौर ए गर्दिश में मुँह को छिपाता।
तुम जिसे कह रहे हो तुम्हारा, उसमें बिल्कुल उल्फत नहीं है।

हुस्न वालों से जाकर के कहना, और तुम भी खबरदार रहना।
इश्क वाले भी हैं हम यहाँ पर, उनकी पूरी हुकूमत नहीं है।

तुमने मुझको कहाँ कब है जाना, मैं हूँ कातिल या हूँ मैं दीवाना।
मैं तुम्हारे जेहन में हूँ जैसा, वैसी मेरी हकीकत नहीं है।

पूछता अब मुझे ये शहर है, आपके प्यार का ये असर है।
वरना मैं राम अदना सा शायर, ये मेरी शान ओ शौकत नहीं है।

स्वरचित मौलिक रचना
रामचन्द्र श्रीवास्तव
कवि, गीतकार एवं लेखक
नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

घर-बाहर संभाल रहीं अब, जिम्मेदारियाँ हमारी

घर-बाहर संभाल रहीं अब, जिम्मेदारियाँ हमारी।
कर्तव्यनिष्ठ मर्दानी-सी, जी रहीं आधुनिक नारी॥

झुमका नथुनी चूड़ी कंगन, हाथ नहीं अब खनकातीं।
पायल की छनन-छनन छन से, प्रियतम को नहीं लुभातीं॥
चौबीसों घंटे मर-मरकर, ढोती हैं जिम्मेदारी।
कर्तव्यनिष्ठ मर्दानी-सी, जी रहीं आधुनिक नारी॥

भावुक मन की नाजुक तन की, अबला की सोच हटाईं।
साधक जैसी निष्ठा लेकर, हिम्मत की ज्योत जलाईं॥
हर समाज की नींव बनी हैं, सोलह श्रृंगार उतारी।
कर्तव्यनिष्ठ मर्दानी-सी, जी रहीं आधुनिक नारी॥

पढ़-लिखकर सम्मान कमाईं, अक्ल विरासत में पाईं।
भरी उड़ानें ऊँची-ऊँची, दुनिया में नाम कमाईं॥
जब कमान थामी है घर की, पड़ी सभी पे अब भारी।
कर्तव्यनिष्ठ मर्दानी-सी, जी रहीं आधुनिक नारी॥

सदा संतुलित रहके नारी, गरल वक्त की है पीतीं।
आर्थिक सहयोगी बनके ही, घर समाज का दिल जीतीं॥
दो-दो कुल की रक्षक बनके, अब पग धरतीं सुकुमारी।
कर्तव्यनिष्ठ मर्दानी-सी, जी रहीं आधुनिक नारी॥

शोभा प्रसाद

समाज का दिखावा

चेहरे पर सादगी, दिल में सौ हिसाब रखते हैं,
अब लोग रिश्तों में भी मुनाफे का नकाब रखते हैं,
मिलते हैं मुस्कान लिए, जैसे अपने ही हों,
पीछे से वही लोग ज़हर बेहिसाब रखते हैं।
सोशल मीडिया पर सबकी ज़िंदगी लाजवाब है,
हर तस्वीर में बस खुशियों का ही हिसाब है,
हकीकत में मगर सन्नाटा चीखता रहता है,
ये कैसा दौर जहां दुख भी बन गया नकाब है।
नेता जी के वादों का मौसम बड़ा सुहाना है,
हर साल नया सपना, वही पुराना अफसाना है,
जनता भी अब सब समझकर चुप बैठी रहती है,
हर झूठ यहां सच बन जाए, बस इतना दोहराना है।
नैतिकता की बातें अब भाषणों तक सीमित हैं,
असलियत में हर कदम पर दिखता अलग ही चरित्र है,
ईमान का झंडा उठाकर जो चलते दिखते हैं,
अंदर से वही लोग सबसे ज़्यादा दूषित हैं।
शिक्षा का दीप जले तो हर कोना रोशन हो सकता है,
वरना अज्ञान का अंधेरा जीवन डुबो सकता है,
कुछ बचपन किताबों में, कुछ बोझ तले दब जाते हैं,
ये भेद मिटे तो ही समाज सच में उज्ज्वल हो सकता है।

महेजबीन मेहमूद राजानी
सड़क अर्जुनी

शीर्षक: "नफ़रत की हार"

कोई ढूंढे कमी तो मुस्कुरा देना,
तारीफ़ कर उसकी, उसे मान दे देना।
ना सोचना बदले से कुछ हासिल होगा,
सोचना, उसकी दुआओं में तेरा नाम शामिल होगा।

उसने दिखाया है सही राह का मंजर,
खुद पर यकीं कर, जीत ले यह समंदर।
जब पा लोगे अपने लक्ष्य को तुम शिखर पर,
शुक्रिया उसका भी करना, अपनी जीत की डगर पर।

जो नफ़रत करे, उसे प्रेम से निखार देना,
बदले की आग को तुम प्यार से मार देना।
मिट जाए अंश नफ़रत का उसके भीतर से,
खुद को तैयार करना ऐसे अटूट सब्र से।

वो शत्रु भाव तज, तुम्हें अपना मित्र बना ले,
तुम साथ निभाना इस तरह, वो तुम्हें जीवन में बसा ले।
नफ़रत मिटाकर, प्रेम भाव से उसको गले लगा लेना,
उसके भीतर का दर्द बने करुणा, उसे ऐसे अपना बना लेना।

नफ़रत की जोत बदलकर जब प्रीत हो जाए,
समझना उस पल तेरी इंसानियत की जीत हो जाए।
प्रेम में सब्र हो इतना, कि नफ़रत पराजित हो जाए,
तुझे गैर समझने वाला भी तेरा मन-मीत हो जाए।

भाग्यश्री डसीला
नर्मदापुरम (म.प्र)

समय का महत्व*"

अनवरत जो चले कभी ठहरे नही,
इस समय पर कभी कोई पहरे नही।
न तो आरम्भ इसका न अंत है कही,
पल में थम जाए ऐसी ये लहरें नहीं।।

वक्त पर वक्त के साथ चलता है जो,
वक्त की कद्र हर पल करता है जो।
आज का काम कल पे नही डालता,
सूर्य बनके धरा पे चमकता है जो।।

सफलता की कुंजी समय ही तो है,
धनदौलत से ज्यादा कीमती तो है।समय की ही कीमत को समझो,
सोच कर के तो सोचो महत्ता तो है।।

गरिमा समय की है जो जान पाया,
सुख शांति को वही प्राप्त कर पाया।
करे जो इसका दृढ़ता से सदुपयोग
क़ीमत ये उसकी वही जान पाया।।

रेखा शंखवार*स्मृति*
उत्तर प्रदेश

शीर्षक: ये जीवन है; सबको,सब नहीं मिलता !

ये जीवन है;सबको,सब नहीं मिलता ।
किसी को आज;तो किसी को कल नहीं मिलता ।।

जिसके पास चुल्हा-चौका है;वो,
आटा-चावल-दाल के लिए तरसता।
जिसकी औकात रोज छप्पन भोग की,
वह भरपूर स्वाद के लिए तरसता ।

जिसके पास खाने वाले हैं;वो,
भोजन के लिए तरसता ।
जिसके पास मखमली बिस्तर,
वह सुनहरी नींद के लिए तरसता ।

जिसके पास ऊंची कोठी है;वो,
घर-परिवार के लिए तरसता।
जो रखता सोनमहल से ताल्लुकात,
वह सच्चा प्यार के लिए तरसता ।

ये जीवन है; सबको,सब नहीं मिलता ।
किसी को आज;तो किसी को कल नहीं मिलता ।।

सुश्री माधुरी करसाल'मधुरिमा'
बिलासपुर छत्तीसगढ़

शीर्षक: प्रकृति

नीला-नीला फैला निर्मल आकाश
सूरज की किरणों में स्वर्णिम प्रकाश
हर कली के भीतर छिपा सुगंध का यश
सृष्टि के कण-कण में प्रभु का वेश
मिट्टी की खुशबू में अजब सी मिठास।

पर्वत की चोटी पर गिरती सफेद धार
नदियों की लहरों में मधुर झंकार
हरियाली ओढ़े खड़ा संसार अपार
फूलों से महक रहा सारा यह द्वार
कुदरत का देखो कैसा अनोखा सार।

पेड़ों की शाखों पर झूमता हर पात
शीतल पवन की चलती निराली बात
धरती पर जैसे खुशियों की बारात
चंदा की चमक में सजी हसीं रात
जैसे कोई मिला सुहाना सा सौगात।

पंछी गगन में भरते ऊँची उड़ान
धरती के आँगन में खिलती मुस्कान
ये झील और झरने वतन की शान
प्रकृति के सुरों में बसती अपनी जान
मानो ईश्वर का दिया हुआ यह वरदान।

नाम: टी.आदि लक्ष्मी
आंध्र प्रदेश

प्रभु जी तुम्हारी इच्छा।

जो भी करोगे अच्छा
प्रभु जी तुम्हारी इच्छा।
पार लगाओगे तुम ही
मैं हूं तुम्हारा बच्चा।

दुख दर्द जब सताए
तुम याद बहुत
हो आए
प्रभु स्वस्थ सब हो जाएं
यही हो तुम्हारी इच्छा।

तुम प्यार सबसे करते हो।
ख्याल सभी का करते हो।
उत्पात अन्याय पर मानव जब उतर आए।
तो तुम भी क्या कर सकते हो?
बुद्धि सभी को दी है
प्रयोग मानव ने गलत की है।
कर्मों की ऐसी सजा देने कीनहीं थी तुम्हारी इच्छा।
हर बच्चा है तुम्हारा बच्चा।

संसार के हर बच्चे को तुम प्यार बहुत करते हो।
कर्मों का फल तो मिलेगा।
दुख दर्द कैसे बचा सकते हो।
संसार में जो बांटते हो मानव,
वही तो वापस मिलेगा।

मधु वशिष्ठ फरीदाबाद हरियाणा

शीर्षक- "एक शोर दबाये बैठी थी"

आँखों में भर आँसू को
आँखों के कोर दबाए बैठी थी,
सुलग रही थी भीतर से वह,
एक शोर दबाए बैठी थी।

थोड़ी-सी थी वह खीझी हुई,
माथे पर लकीरें खिंची हुई,
मुट्ठी भी थी तब भींची हुई।

कह न सके,न शोर करे,
समझाने कापुरज़ोर करे।

समझ न पाया मोटी बुद्धि,
पति है उसका उल्टी खोपड़ी।
समझ न पाया पीर यहाँ,
बात जो थी गंभीर यहाँ।

बेबस मन बेचारी का,
कोई तोड़ न था लाचारी का।
करती भी तो क्या करती,
बस आँखों में वह आँसू भरती।

वह पल्लू के एक छोर को
मुट्ठी में दबाए बैठी थी।

-सौरभ कुशवाहा गाज़ीपुर (उत्तर प्रदेश)

शीर्षक
कोई वक्त नहीं होता

ये बे मौसम बरसातें करवातीं हैं अहसास।
अरे आने जाने का कोई वक्त नहीं होता।

बेवजह कभी यह मन होता बड़ा उदास।
भावों को जताने का कोई वक्त नहीं होता।

दुनिया की भीड़ में जब अपने हों न पास।
ख़ुद आप संभलने का कोई वक्त नहीं होता।

दो पल का सुकून भी देता खुशियां ख़ास।
अफ़सोस मगर इसका कोई वक्त नहीं होता।

यादों के साए में तू भी बैठ जा आकर पास,
झिलमिल सी यादों का कोई वक्त नहीं होता।

अपनेपन का देखिए कभी हुआ नहीं अहसास।
उन रिश्तों को जीने का कोई वक्त नहीं होता।

रस्ता जोहती आँखें तिल तिल मरते अहसास।
अहसास जताने का रेखा कोई वक्त नहीं होता।

रेखा रानी
विजय नगर गजरौला, जनपद अमरोहा, उत्तर प्रदेश।

मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है

मां जननी है , शक्ति है मां
राम कृष्ण की भक्ति है मां
मां धरती पर ईश्वर की परछाईं है
मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है

वात्सल्य प्रेम की मूरत है मां
चारो धाम और तीरथ है मां।
मां ने चरणों से गंगा बहाई है
मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है

स्वार्थ है दुनिया,निस्वार्थ है मां
स्वपन से लेकर यथार्थ है मां
कितनी रातें मां ने जाग कर बिताई हैं
मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है

बच्चे का हंसना,रोना है जागना,सोना है मां ।
अपने बच्चे का पसंदीदा खिलौना है मां।
मां बच्चे की कपड़े की तुरपाई है।
मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है

मां बच्चे का खाना,पीना है शिक्षा भी है ।
गर्मी में बच्चे की ठंडी छांव है मां ।
सर्दी के रातों में मखमली रजाई है।
मां में ही सम्पूर्ण सृष्टि समाई है।

मिताली श्रीवास्तव वर्मा
भिलाई छत्तीसगढ़

विषय -बस मुझे संघर्ष करने दो

जीना ही जीवन है प्यारे,बस मुझे संघर्ष करने दो।
जैसी करनी वैसी भरनी, कर्मों का फल भरने दो।।

पीछे न हटूॅंं पर्वत चढ़ने से, मंजिल दूर नहीं मेरे।
सात समंदर पार चलूॅंंगा,चाहे घनघोर घटा घेरे।।
दुखियारों के हर दुखों को, आज मुझे अब हरने दो।
जीना ही जीवन है प्यारे,बस मुझे संघर्ष करने दो।।

चाह नहीं है फल का मुझको, सच्चा कर्म करूॅंंगा मैं।
माया ममता मोह मान छोड़, प्रभु का ध्यान करूॅंंगा मैं।।
लख चौरासी जनम लियोतब,मनु के रूप में तरने दो।
जीना ही जीवन है प्यारे, बस मुझे संघर्ष करने दो।।

निश्चय कर लो सब संभव है, मेहनत से रोटी मिलती है।
हरियाली हो निर्जन वन में,बगियाॅंं में कली भी खिलती है।।
नहीं अँधेरा अब जीवन में,सबको जग में पलने दो।
जीना ही जीवन है प्यारे, बस मुझे संघर्ष करने दो।।

नहीं डरेंगे अब क्या होगा, जीत हार दो पहलू हैं।
धूप-छांव दिन-रात सदा ही,कर्म वीर या निठल्ले हैं।।
करें देश से गर गद्दारी, गद्दारों को अब ढहने दो।
जीना ही जीवन है प्यारे, बस मुझे संघर्ष करने दो।।

मन मेरा कहता है वैष्णव,नभ से चाॅंंद तारें तोडूॅंं।
शिला तोड़ अब राह बनाऊँ,समय चक्र पथ को मोडूॅंं।।
चाह नहीं है नाम अमर हो, देश के खातिर मरने दो।
जीना ही जीवन है प्यारे, बस मुझे संघर्ष करने दो।।

लक्ष्मण वैष्णव कोरबा

"*गुरू ही करता शिष्य का कल्याण*"

गुरू बिन शिष्य का उत्थान न होवै,
गुरू बिन होवै न कहीं पर सम्मान |
गुरू ही सदा शिष्य के मार्गदर्शक हैं,
गुरू ही करता शिष्य का कल्याण ||

राह दिखाते व मंजिल तक पहुंचाते,
शिष्य को नीति ज्ञान का पाठ पढ़ाते |
जीवन के हर मोड़ पर दिशा दिखाते,
शिष्य के उत्कर्ष को गुरू ही बढ़ाते ||

प्राचीन काल से गुरू के सानिध्य में,
शिष्य को मिलता है हर एक ज्ञान |
गुरू ही शिष्य के पथ-प्रदर्शक हैं,
गुरू से ही शिष्य बनता है महान ||

जीवन मंत्र है गुरू का नित पूजन,
गुरू ही जीवन के आधार स्तम्भ हैं |
गुरू बिन शिष्य बनता नहीं ज्ञानी,
गुरू से ही होता ज्ञान का आरंभ हैं ||

आओ गुरू का नित हम ध्यान करें,
अपने गुरू का सदा ही सम्मान करें |
गुरू को ही साक्षात् ईश्वर तुल्य मानें,
गुरू भक्ति में स्वयं का कल्याण करें ||

प्रेमलाल किशन 'स्नेहिल'
(शिक्षक सह साहित्यकार)
विकास खंड व जिला-सक्ती, छत्तीसगढ़

,,
आओ माई सरस्वती ----------

आओ माई सरस्वती हमरे द्वारे ,
कण्ठ अवरोध खतम होई जाये।
ज्ञान की गंगा जग बह जाये,
जड़ता का रेत जमींदोज होई जाये।
समरस दृष्टि जग दृग बस जाये,
असमता का पुष्प मुरझा ही जाये।
राग द्वेष जड़ ज्ञान धारा बह जाये,
प्रेम प्रीति अक्षर शब्द बन जाये।
ज्ञान प्रवाह जग पसर जाये,
मूढ़ता की उर्मि तद विलिन होई जाये।
जन मन पुकारे दौड़े माई चली आवे,
मन मन्दिर ज्ञान भरी भरी जाये।
लघु और दीर्घ समयानुकूल होई जाये,
विसम का अन्धढ़ ज्ञान समीर सिमट जाये।
राम कहो ओम प्रिय ईष्ट दौड़े आये,
मां वीणा का गुन गाते अघाये।।

डॉ ओमप्रकाश द्विवेदी ओम पडरोना कुशीनगर

"ख़ामोशी की चीख"

पुरानी उस कोठरी में सन्नाटा अब भी सोता है,
अंधेर के इस पहर में, हर लम्हा ज़ख्म बोता है।
दीवारों पर जमी हुई है, वो धुंधली सी परछाईं,
जैसे मौत ने इस कमरे में, अपनी बस्तियाँ बसाईं।

हवाओं की उस सरसराहट में, कोई चीख छिपी है,
टूटे हुए उस आईने में, किस्मत अपनी दिखी है।
मेज पर रखा है एक खत, जिस पर खून का निशान है,
ये कैसी खौफनाक जगह, जहाँ थम गया हर अरमान है।

दरवाजे की दरारों से, ठंडी हवाएं आती हैं,
दबी हुई उन आहटों से, रूहें भी घबराती हैं।
कोई अदृश्य साया, अब मेरी तरफ बढ़ता है,
इस खामोश मंज़र में, डर का नशा चढ़ता है।

दीपक की वो आखिरी लौ, अब काँप के बुझती है,
सच्चाई उस अंधेरे की, अब गले को कसती है।
रात के इस अंत में, अब कुछ भी नहीं बाकी है,
वीरान उस खंडहर में, बस मौत की ही काफी है।

{शुभम कुमार}

कविता मुझे साथ ले चलो

मुझे तुम साथ ले चलो, पकड़ हाथ ले चलो ।
अकेली थक रही हूं मैं, तुमसे कह रही हूं मैं !
मुझे आसमान के पार जाना है ;बादलों की दीवार को चीरते हुए ,
मुझे नाव के हीरे चाहिए।
मेरी चुनरी में संग तुम भी गिनते हुए ,
छुपा राज क्या कहना, यह प्रेम का साज क्या कहना !
बाहें छोड़ना नहीं, उड़ूं मै तो रोकना नहीं ।
प्रिय,तुम मेरे हृदय का स्पंदन हो ।
मेरी मुस्कुराहट हो ,मेरा गर्व हो ,अभिनंदन हो ।
तुम्हारे संग की हुई हर यात्रा ,मुझे स्वर्ग तक ले जाएगी ।
भले खेतों की मेड तक, या हरिद्वार के घाट तक ,
मेरी मंजिल तुम्हारे प्रेम में ही पाएगी ।
कुछ सुनहरे सपने ,कुछ सुनहरे सवेरे ,कुछ गुलाबी शाम
जीवन में तुम्हारा साथ रहे, यह पल ना हो विराम ।
मुझे तुम साथ ले चलो, पकड़ हाथले चलो।
पता नहीं, सफर किस तरह शुरू हुआ ,मगर
तुम्हारे संग की हुई यह यात्रा ,स्वर्ग की ओर ले जा रही थी !
जीवन की हर टूटी सांस तुम्हारा नाम दोहरा रही थी !
अंत समय शायद, नजदीक आ रहा था ।
होठों पर मुस्कान थी, शायद यात्रा पूर्ण हो रही थी ।
मगर मेरे दिल और चेहरे पर मुस्कुराहट थी ,शांति थी
,परिपूर्ण मेरा जीवन था ।
तुम्हारे संग जीवन की इस यात्रा में, कितने उतार चढ़ाव आए
,
मगर जीवन की, अनोखी यात्रा के तुम बनाकर पूर्ण
विरामआए ।
पता नहीं ,अगला जन्म कब ,कैसे ,कहां होगा ?
मगर मुझे तुम संग जीना है,_ यही हुआ है; यही होगा !
तभी तो कह रही हूं, तुम्हें पुकार रही हूं ,
मुझे तुम साथ ले चलो; पकड़ हाथ ले चलो ।
मुझे तुम साथ ले चलो, पकड़ हाथ ले चलो।

ज्योति सोनी वैदेही

मुझे तोड़ देना वन माली, मुझे पथ पर देना तुम फेंक,

मुझे तोड़ देना वन माली, मुझे पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर मरजावें वीर अनेक।
मैं बन जाऊं एक पत्थर, जिस पर पड़ें पैर वीरों के,
मैं बन जाऊं एक दीपक, जिसकी रोशनी में चमकें वीर।

मैं बन जाऊं एक नदी, जिसकी लहरें वहे आशा की,
मैं बन जाऊं एक फूल, जिसकी खुशबू से महकें वीर।
मैं बन जाऊं एक पहाड़, जिस पर चढ़ें वीरों के कदम,
मैं बन जाऊं एक तारा, जिसकी रोशनी में चमकें वीर।

मुझे तोड़ देना वन माली, मुझे पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर मरजावें वीर अनेक!
मैं बन जाऊं एक शस्त्र, जिसकी धार से कटें शत्रु ,
मैं बन जाऊं एक शक्ति, जिसकी गरज से डरें शत्रु।
मैं बन जाऊं एक नदी, जिसकी लहरें बहे देशभक्ति की,
मैं बन जाऊं एक पहाड़, जिस पर चढ़ें वीरों के कदम।
मैं बन जाऊं एक तारा, जिसकी रोशनी में चमकें वीर,
मैं बन जाऊं एक शस्त्र, जिसकी धार से कटें शत्रु।।

- डॉ सुखमंगल सिंह/ वाराणसी

जिसे मिले ना मंजिल वह विजयी नहीं होता

मध्य मार्ग में मत विचारो सवर्णों
आर करो या पार करो
जब तक यूजीसी रोल बैक या उसमें सुधार ना होवे
तब तक अपनी विरोध जोरदार करो।1।

कोर्ट में डेट पर डेट लग रहे हैं
इसको तुम फॉलो करते रहो
गाँव - गाँव, गली - गली, शहर - शहर में यूजीसी बिल का
विरोध जोरदार करो। 2।

सरकार की मंशा ठीक दिखती नहीं
वह भरोसे की भी काबिल नहीं रही
उन पर विश्वास नहीं करो तुम अपनी विरोध जोरदार करो।3।

मध्यमार्गी का कोई वज़ूद नहीं होता
लक्ष्य पर जो तीर ना रखे वह कदापि वीर नहीं होता
जो छेद ना सके लक्ष्य को वह धनुषधारी नहीं होता
जिसे मिले ना मंजिल वह विजयी नहीं होता ।4।

-अजीत सिन्हा
मुख्य संयोजक, एस. समाज

शीर्षक -स्मृतियों का पिटारा

स्मृतियों का स्पर्श ..
पुनः हुआ है मन में आज,
कैसे बजती थीं संगीत तरंगें,
जीवन थिरकता था संग साज।

कोलाहल में भी थी शांति,
अलमस्त हम फिरा करते थे,
बातों में मशगूल, दुनिया से दूर,
सखी-सहेलियों संग घिरा करते थे।

सुध न रहती थी शाम की,
सखियों की ठिठोलियों में,
बारिश की बौछारों में झूमते,
कभी आँगन, कभी गलियों में।

सौंधी-सी महक आज फिर,
आँगन की मिट्टी से आई थी,
स्मृतियों के आँगन में खड़ी मैं,
आँखें मूँदे मुस्काई थी।

तभी एक तेज गड़गड़ाहट ने,
अचानक मेरी आँखें खोलीं,
बारिश की बूँदें टिप-टिप करतीं,
सूखे कपड़े उतारने को बोलीं।

स्मृतियों के स्पर्श से भीगी थीं आँखें,
कपड़े लाते-लाते वे भी धुल गईं,
गृहस्थी और जिम्मेदारियों में रँगी,
स्मृतियों का पिटारा वहीं भूल गई।

-श्रीमती अंजना दिलीप दास
बसना छत्तीसगढ़

*साँझ****

सोला श्रृंगार कर
साँझ सजी....
भर कर सिंदूर
नवबधु है बनी.....

सकुचाई सी बैठी
राह तके पिय की
झीना घूँघट ओढ़े
कोहरे में सिमटी

देखो चंपा ने
गजरा महकाया...
लताओं ने हार
बांहों का पहनाया...

रवि भी भाल पर
बिंदी सा सजा....
आँखों में काली सी
घटा का कजरा लगा

मिलन के गीत
गाते पंछी चहकते
स्वर्ण सी किरणों
के हार से सज के...

धीरे-धीरे से
मुँदती साँझ की पलकें...
घटाओं सी
बिखेरी उसनेअलकें...

मदहोश पवन
देती प्रेम के झोंके...
पेड़ों के झुरमुट से
कोयल भी बहके...

नदी की लहरों
ने सरगम है छेड़ी...
लो आ ही गये पिय
अब उसकी ड्योडी...

साँझ के कपोल को
फूलों ने रंग दिया...
अधरों को भवरों ने
मधु का रस दिया...

कमनीय साँझ
का शबाब हसीन
पर्वतों से बहता
झरने का संगीत...

सिमट चली साँझ
बनी पिया की मीत...
बांहों में समेटे सारे
ख्वाब और तकदीर.

ओ!साँझ अब तुम
विलीन हो गईं ना
बिखेर कर मन में
न जाने कितने रंग...

प्रिय साँझ!
रहो प्रेम गली में
अपने पिय के संग
यूँ ही सदा खुश रंग

पूजा नबीरा
काटोल

ग़ज़ल

खुद ग़लत रास्तों पर चलाया गया
और इल्ज़ाम हम पर लगाया गया

जाने क्यों उसके घर को गिराया गया
बे सबब ही उसे क्यों सताया गया

ऐक ही देश के हम तो सन्तान हैं
क्यों किसी को गिराया उठाया गया

जड़ तो इसकी सियासत के अन्दर छुपी
किस क़दर नफरतों को बढ़ाया गया

उनकी फ़ितरत है कैसी पता ही नहीं
उल्टा चक्का हमेशा चलाया गया

चारो जानिब तमाशा जो होने लगा
आज माहौल ऐसा बनाया गया

उनकी महफ़िल में जाना गवारा न था
जाने क्यों आज मुझको बुलाया गया

शहर में आज नफ़रत की आंधी चली
आज फिर खून कितना बहाया गया

कोई गौहर को कुछ तो बताऐ ज़रा
हमको आपस में क्यों कर लड़ाया गया

ग़ज़लकार
रियाज खान गौहर भिलाई छत्तीसगढ़

सहारा

संसृति में इन्सान को, पग-पग मिले विकल्प।
जब भी टूटे मध्य में, रिश्तों का संकल्प।।
कटे पौध तो है कलम, उखड़े रोपण हेतु।
उपजे फसलें बेतुकी, सृष्टि नियामक सेतु।।
जीवन की बारीकियाँ, दृश्यमान स्वयमेव।
पाषाणी संसार में, दुखी बेचारे देव।।
अन्तस्तल में फैसला, वाणिज्यिक प्रस्ताव।
भावानुभाव विभाव के, बिम्ब संचारी भाव।।
मिटे हुए पगचिह्न भी, क्षीणकाय अवशेष।
व्यक्त विरासत बोलती, दर्शन वृत्ति विशेष।।
दृश्यादृश्य चितवृत्तियाँ, प्रतिबिंबित छबि छाँव।
दाँव निरखने के लिए, परख लीजिए पाँव।।
मन्द चले तो शान्ती, तेजी में आक्रोश।
सहमे तो चिन्तित दुखी, बहके तो मदहोश।।
आवाहन सुखकर लगे, दुखद मध्य प्रस्थान।
जगती में सबकुछ नियत, काल कला स्थान।।
दृश्यादृश्य सुशक्तियाँ, संभाले जग दीन।
अनुचित दुख नित भोगता, दत्तचित्त प्रवीन।।
अंधेरे में रास्ते, दीप जलाकर खोज।
लक्ष्य साध चुप शान्ति से, बिना बनाये पोज।।
सत्य सहारा आखिरी, सुख-दुख के दरम्यान।
नाजायज जग थोपता, अनुचित मिथ्या ज्ञान।।

रचनाकार-डॉ० मनीराम वर्मा
गुवाँव (पालीपट्टी), चाँदपुर, टाण्डा
अम्बेडकरनगर, मो०-9450491402

ना तुम मेरे हुए, ना हम तुम्हारे हुए

ना तुम मेरे हुए, ना हम तुम्हारे हुए
ज़िंदगी यूँ ही गुजर गई, अनकहे किस्से अधूरे हुए |

मिले तो थे कभी राह में, पर हाथ थाम न पाए हम ,
और इस तरह से अपने ही, सपनों से दूर हो गए हम |

कितने ही जमाने बीते, पर याद ताज़ा अब भी है ,
तुम्हारा नाम लेते ही, दिल में हलचल सब भी है |

कभी भटकते चलते-फिरते, अचानक तुम याद आ जाते हो ,
ऐसा लगता है जैसे फिर से तुमको पास पा जाते हो |

पर ये दूरियां अजीब हैं, न घटती हैं न मिटती हैं ,
हर बार पास आकर भी, और गहरी हो जाती हैं |

ना शिकवा है, ना गिला है, बस एक कसक बची है ,
जो अधूरी रही कहानी, वही अब तक सजी है |

ना तुम मेरे हुए, ना हम तुम्हारे हुए ,
फिर भी तुम्हीं में कहीं, हम सदा के लिए ठहरे हुए|

वैशाली रस्तोगी

शीर्षक - *मिला जो मन का मीत*

सूना -सूना था ह्रदय मेरा, सूना- सूना था अंतर्मन,
जैसे थका मुसाफिर ठहरा हो, सूना हो घर आँगन।
ना शब्द थे, ना अर्थ था, बस सांसों की थी संगीत,
किस्मत का दर खुल गया, मिला जो मन का मीत।।

सहसा सखी ऐसा हुआ,की बुझता दीपक जल गया,
जमा हुआ ये हिम सा मन, बनकर प्रेम पिघल गया।
अब न कोई माँग है रब से,न दुनिया से है कोई जीत,
हुई मुकम्मल ये जिंदगी, मिल गया है जो मन मीत।

न परिचय न कोई सेतु बनी, नहीं कोई संवाद किया,
जैसे हो बरसों से रिश्ता ,ऐसा दिल ने आभास किया।
बरसों पुरानी प्यास की, बरस रही ये सावन प्रीत है,
ईश्वर का दिया वरदान है, मिला जो मन का मीत है।

जैसे चंदा को चकोरी या, भौरें को मिली हो कलियाँ,
महक उठी हैं मेरे मन में,मिटाकर तम की सब गलियां।
गूँज रही है रोम-रोम में, अब तो बस अनुराग -प्रतीत,
धन्य हुआ ये जीवन मेरा, मिल गया जो मन का मीत।

समर्पित है यह जीवन अब,उनके ही पावन चरणों में,
जैसे कोई सरिता मिल जाए, सागर के ही लहरों में।
अमर प्रेम की गाथा लिखने, आए मेरे मन का मीत,
जनम-जनम का विरह टुटा, मिला जो मन का मीत।

डॉ. बसंत श्रीवास वसंत (नरगोड़ा)
रामकृष्ण मिशन आश्रम नारायणपुर
छत्तीसगढ़

मेरी पत्नी डॉ० कल्पना है महान

मेरी पत्नी डॉ० कल्पना है महान,
क्योंकि हमारा रखती हैं नित ध्यान।
राजनीति विज्ञान की ज्ञाता हैं,
इसलिये मेरे लिए भाग्य विधाता हैं।
राजनीति विज्ञान, माँ सरस्वती का है रूप,
जिन्हें पढ़कर व्यक्ति होता नहीं कुरूप।
मेरी किस्मत अच्छी है।
इसलिए मेरी पत्नी है मेरे लिए कृपा निधान।। 1।।
मेरी पत्नी डॉ० कल्पना है महान....

पत्नी पाकर मैं आध्यात्मिक रूप में बहुत खुश रहता हू।
तभी तो मैं मानव एवं-पक्षियों के कल्याण हेतु लिखता-
पढ़ता रहता हूँ।
व्यर्थ की बात नहीं लिखता हूँ,
अपितु पर्यावरण-संरक्षण के लिए भी सार्थक चिन्तन-
मनन करता हूँ।
मैं भी संस्कृत वाणी स्वरूप माँ सरस्वती का परम उपासक
हूँ।
तभी तो मानव एवं पशु-
पक्षियों के कल्याण हेतु स्पष्ट बात लिख पाता हूँ।
उक्त सब चिन्तन-
मनन का कारण है मेरी पत्नी महान।। 2।।
मेरी पत्नी डॉ०कल्पना है महान....

मेरी पत्नी मुझे बहुत ध्यान रखती हैं।
तभी तो मुझे किताब बहुत मिलती है।
यही कारण है कि मैंने लगभग 1900 -
किताब इकट्ठा कर पाया पाया।
जिसके फलस्वरुप मुझे दो सौ से अधिक-
पुरस्कार सम्मान मिल पाया।
उक्त पुरस्कार में 'शिक्षक श्री' है समाहित।
जिसे दिया है, उत्तर प्रदेश सरकार सम्मान सहित।
शिक्षक श्री पुरस्कार में रुपये डेढ़ लाख है विराजमान।
जिसे पाकर मैं पर्याप्त हुआ ऊर्जावान।
पुनः मैं चयनित हुआ सरस्वती पुरस्कार सम्मान के लिए।
जिसमें समाहित है, रुपए तीन लाख मिलने के लिए।
उक्त सम्मान पुरस्कार में मेरे पत्नी का है बहुत बड़ा
योगदान।
इसलिए मेरी पत्नी है बहुत महान।।3।।
मेरी पत्नी डॉ० कल्पना है महान.....

मेरी पत्नी भी है राजकीय हाई स्कूल की प्रधानाध्यापिका,
जिनकी, राजपत्रित से बढ़ी है गरिमा।
मैं भी अपने राजकीय महिला महाविद्यालय में,
प्राचार्य स्वरूप कर रहा हूँ सेवा काम,
क्योंकि हमारा महाविद्यालय भी है पावन धाम।
उक्त विद्यालय/महाविद्यालय स्वरूप पावन धाम से-
मुझे मिला है पर्याप्त ज्ञान,
जिसके परिणाम स्वरूप हमने शताधिक शोध-
पत्र प्रकाशित करवाया,
जिसमें मैंने मानव एवं पशु-
पक्षियों के कल्याण हेतु सार्थक बात लिख पाया।
औरो की तरह मैंने फालतू की बात लिखकर-
ढेर सारा शोध-पत्र नहीं है छपवाया।
जो मानव एवं पशु-पक्षियों के हित से सम्बंधित है,
वही बात शोध-पत्रों में लिखकर प्रकाशित करवाया।
उक्त तरह के पठन-पाठन में मेरी पत्नी का है-
बहुत बड़ा योगदान।
इसलिए मेरी पत्नी भी है ज्ञानवान।।4।।
मेरी पत्नी डॉ० कल्पना है महान...

प्रो०(डॉ०)सिकन्दर लाल
वरिष्ठ कवि/ वरिष्ठ साहित्यकार/प्राचार्य
(PRINCIPAL),

"मेरा वतन"

हम सबको जान से प्यारा ये वतन,
अपने लहू से सींचेंगे प्यारा ये चमन।
आजादी के दीवाने परवान चढ़े गए जो,
दिल में दफन, यादें
शहीदाने वतन हैं।।

क्या मुकाबला करेगा अब दुश्मन भी,
निकले हैं घर से बांध के सर पर कफन।
दिल में सभी के हैं कितने बुलंद हौंसले,
तूफान का रुख मोड़ दे है सबका जतन।।

कोशिश गलत की दुश्मन ने बीज बोने की,
जड़ से उखाड़ फेंकेंगे यह है अपना वतन।
मिलजुल के रहो मुल्क में झगड़ा न हो कहीं,
हमदर्द और खुशहाल बनो है मेरा कथन।।

हर प्राणी आजाद रहे इस अमर जहांन में,
परचम की बुलंदी पर नीला आज गगन है।
धरती हर्षित चहूं दिशाएं चमकित,
कन्याकुमारी से हिमालय तक,
हर्षित हो बहती प्रेम पवन है।।

आजाद होकर हर प्राणी आज झूम रहा है,
आजादी का जश्न प्रतिदिन मना रहा है।
भारतीय संस्कृति का परचम लहरा रहा है,
हिंदुस्तान है अपना ये सब को बता रहा है।।

मानुष जन्म अमोल इसे पानी में न डालें।
ये बात "अल्पना" सबको बताए ।।

कवियत्री डॉ.अल्पना जैन
महाराष्ट्र गौरव
मालेगांव नासिक महाराष्ट्र

जंगल

जंगल की हरियाली सबको लुभाती है ।
थके हारे दिल को सुकून दिलाती है।
दुनियादारी के झमेले से दूर चले सब जंगल की ओर ।
जहां होती पक्षियों की चहचहाहट और नाचते मोर ।

जहां मिलते महुआ,
तेंदु और चार ।
जहां वनवासी देते
सम्मान और प्यार।
जंगल के टेढ़े मेढ़े कच्चे रास्ते,
कठिन जीवन को आसान बनाने के वास्ते
चलते हैं पहरेदार दूर तक पैदल
जंगल को बचाने के
वास्ते ।
बंदर करते हैं स्वागत उछलकर,
जंगल में रहना जरा संभल कर ।
चालाक लोमड़ी की चालाकी धरी रह जाती इंसानों के आगे।
खतरनाक शेर भी दुम दबाकर भागते ।
महुआ झरकर जब जब अपनी महक फैलाते,
भालू भी झूमते चले आते।
हरियाली हमें अपने आसपास भी लाना है।
पर्यावरण को स्वच्छ बनाना है।

मिथिला खिचरिया
77/16 नेहरू नगर ईस्ट
भिलाई (छत्तीसगढ़)

पर्यावरण

मैं चाहती हूं मेरी लेखनी
अब शब्द नहीं
वो रसायन उगले जो कर सके परिष्कृत
मन का पर्यावरण

हमें बाहर का प्रदूषण
लील रहा है
बहुत शोर है वृक्ष उगाओ
धरा बचाओ/जीवन सजाओ
हमें पता है इस बाह्य का
प्रदूषण कहां है ? क्यों है ? कितना है ?
फिर बढ़ रहा है/हर ओर /चारों ओर
हमें चिन्ता नहीं
हम भी विरोध में नारा लगाकर
जागरूक/प्रगतिशील पर्यावरणविद्
कहला सकते हैं/सबको बहला सकते हैं
बहका सकते हैं
हमें प्रदूषण की चिन्ता कहां है
प्रदूषण कर-करके हम आधुनिक बने हैं महानगरों में
कोठी-बंगले सजे हैं
लम्बी गाड़ियां , स्कूल,होटल बढ़े हैं
सूरज पर काले बादल घिरे हैं
कुछ भी हो
जब हमने आहत करने वाली संवेदनाएं
कचोटने वाली भावनाएं
व्यथित आत्माएं
अकुलाती चेतनाएं
कुचल-कुचल कर निष्प्राण कर डालीं
उनकी लाशों के दाह-संस्कार का भी
हमें अवकाश नहीं
बढ़ती दुर्गन्ध से बचने का प्रयास नहीं
फिर किस अन्तः प्रेरणा से प्रेरित हो
हम कर पाएंगे यह वातावरण शुद्ध
बस निश्चिन्त हो
इस मत्स्य गन्ध को अपनाओ
निश्चिन्त हो सो जाओ
सुबह का सवेरा होगा
भले ही चहचहाती चिड़िया
खिलखिलाती कलिया को न हो
काले सूरज का ही हो
पर होगा तो अब प्रदूषित परिशुद्ध में
अन्तर करने का विवेक और समझ
तुम में कहां है ?

डा ममता जैन पुणे

प्रेम नदी हो तुम

"पीतसारिका"
एक प्रेम नदी, हो तुम !
"पीतसारिका"

मैं तट का पातहीन द्रुम !
बहने लगी भीतर मेरे,
कुछ 'पीतगंध' से पुष्प लिए !!
नित नए नेह के नीड बुने,
कुछ प्रणय निवेदित गीत दिए !!

तुम शीतल सांझ, बयार !
"पीतसारिका",

मैं दमित कोई अभिसार !
दहने लगी भीतर मेरे,
अरण्य आग सी तपन लिए !!

तन बना, वासन्ती वेदि कुंड,
और मकरंदों ने हवन किए !!

तुम मधु-मादक, सी राग !
"पीतसारिका"

मैं आषाढों में दबी आग !
बजने लगी भीतर मेरे,
मेंहदियाए पैरों के नृत्य लिए !!
तुम 'गीतिका' सी नाच उठी,
विसुध अभिसारित गीत लिए !!

तुम पुष्प राग का, भाव प्रिये !
"पीतसारिका",

मैं नागफनी की छाँव प्रिये !
झरने लगी भीतर मेरे,
झरनों के तेज बहाव लिए !!
तुम झील बनो गहरी गहरी,
मत बीजो 'सोनजुही' बरुए !!

एक प्रेम नदी, हो तुम
"पीतसारिका"

(प्रो० लक्ष्मीकांत शर्मा)

बादल

बादल रोया समंदर पर जाकर
अंधेरा ही अंधेरा था वहाँ पर...
मन में थी बची एक आस
टूट गई, लौटा होकर उदास
समंदर बोला—
रोने वालों की यहाँ कमी नहीं,
सब आते भरने, देने की नीयत नहीं
बादल चौंका, खुद से नज़रें चुराईं
हर बार शिकायतें ही तो दोहराईं
राह में मिली एक छोटी सी किरण
बोली- क्यों खोता यूँ अपना जीवन
तू ही तो है जो धरती हरियाता
तेरे बिन यह जग सूना हो जाता
चुपचाप दिशा बदली उसने
पहाड़ों से टकरा खुद को तोड़ा
जब बिखरा... तो बरस गया
सूखी धरती पर विहँस गया
तभी समझ आया ये राज—
जो सिर्फ लेने जाए, वो लौटे उदास
जो दे दे खुद को...वही बनता खास।

ज्योत्सना

मत करो शिकायत

तुम्हें कुछ नहीं मिला ,
मत करो तिरस्कार उस जिंदगी का ....
जो है खूबसूरत तोफहा ईश्वर का ....
मत करो शिकायत ,
कि तुम्हे वो नहीं मिला ..
गौर से देखो जरा ,
तुम्हें क्या कुछ नहीं मिला ...

जो भी मिला ,
उसके लिए शुक्र करो खुदा का ...
वरना तो कुछ लोगों का ख्वाब है ,
तुम्हारे जैसी जिंदगी जीने का ....

वश बहुत हुआ ,
हर बात पर रोना बंद करो ...
स्व आत्म संयम का बोध करो ...

हिम्मत से समेटें स्वयं को ,
बात बात पर दोष देना बंद करो ...
सामर्थ्य है यदि तो ,
जो किसी को पता न चले ऐसी किसी की मदद करो ....
बहुत कुछ है तुम्हारे पास उसका बोध करो ...

जो तुम्हारा है नहीं ,
उसके पीछे क्यों भागते हो ..
जो खूबी है तुम्हारी ,
उसे निहारने की कोशिश तो करो ...
अपने आप पर किसी को हावी मत करो ....

बहुत कर ली शिकायत मांगने की ,
अब इतना भी स्वार्थी मत बनो ...
प्रबल बोध स्वयं का करो ,
फिर जो चाहे वो बनो ....

मां पिता के प्यार ,
बुजुर्गों का हाथ ,
दोस्तों का साथ ,
पर्याप्त है एक अच्छी जिंदगी जीने के लिए .....
यदि न भी मिले तो स्वयं को समझो ,
मत करो शिकायत इसके लिए ....
मत करो शिकायत ....

अंजली

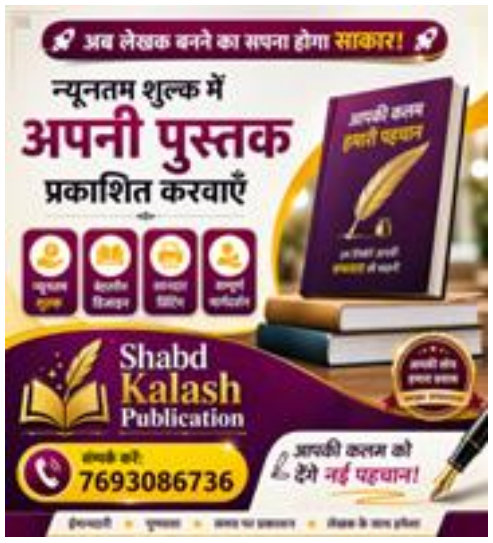

हाय बज्जी

निर्दयी क्रूर भ्रम में तू चूर, बोलो बज्जि का क्या कसूर,
क्यों उसे यहाँ पर पीड़ा दी, पर काट उसे तू क्या कर दी।
वह था अनाथ स्वभाव मृदुल, रहता कितना था वह मिलजुल।
हो कर कठोर घनघोर कष्ट, दी उसे व्यथा पीड़ा असमझ।
अब कहो भ्रमर् गति के चालक, क्यों नहीं करें तुम पर ही शक।
अब कौन यहाँ है रखवाला, है कौन उसे देने वाला।
उसकी यह व्यथा अपार हरे, न मालूम क्या करें न करें।
पर एक बात निश्चित जानो, हो सके मुझे तू पहचानो।
ऐसे में छोड़ नहीं सकता, ऐसे को हृदय बीच रखता।
मैं भी कायल हूँ पा करके, रखता था उसे छुपा करके।
बिल्ली कुत्तों से दूर रखा, सेवा उस पर भरपूर रखा।
अपनों से अधिक संभाला था, हर दिन दाना मैं डाला था।
वह भी सर्वस्व लुटाती थी, सब छोड़ दौड़ आ जाती थी।
सहसा इक दिन विकराल हुआ, मानो एक प्रकट ही काल हुआ।
दिन के दो बजे प्रहार हुआ, वह जुल्म हुआ पहाड़ हुआ।
कट गयी भुजा पंखा के बल, देखी प्लावित होती हलचल।
फिर हाहाकार हुआ नभ में, मानो बबंडर हो जल में।
वह गिरी विहीन पंख के बिन, कट गए पैर आई दुर्दिन।
मैं अचल वहाँ पर रह न सका, ज्यों हो विनास यह साफ दिखा।
दौड़ा फिर उठा लिया भुज से, छाती से लगा लिया भुज से।
बोला अमृत सुत क्या है गति, किसने मारी थी तेरी मति।
क्यों गया काल के गाल मित्र, होता ही जग में है बिचित्र।
सुख और परम हित खलता है, कुछ लोग बहुत पर जलता है।

त्रिपुरारी

शीर्षकः नारी शक्ति की संवेदना !!

भावनात्मक करुणा जिस का स्वभाव है
शक्ति दुर्गा का काली जिसके अवतार है
ममता करुणा का आंतरिक भाव है,
ऐसी मेरी नारी शक्ति की संवेदना,
को नतमस्तक संसार है!!

बधा ओ को पार करने का साहस जिस में है
हर क्षेत्र में उत्सुष प्रदर्शनी क्षमता का एहसास है
अन्याय सहकर भी जितने जिसे आभास है
ऐसी मेरी नारी शक्ति की संवेदना ,
को नतमस्तक संसार है!!

गहरी और आंतरिञक बल से बनाती समाज है
चारों दिशा को देती एक कर भारत का एहसास है
माटी से मां, करुणा और शक्ति का अवतार है
ऐसी मेरी नारी शक्ति की संवेदना
को नतमस्तक संसार है!!

भारत कि संस्कृति की अद्भुत पहचान है
जीवनदयानी एक नए जीवन को देती जीवन है
ममता और प्रेम की साक्षात मूर्ति का अवतार है
ऐसी मेरी नारी शक्ति की संवेदना को

नाम : पूनम मिश्रा (सहायक प्राध्यापिका)

शीर्षक:- आजकल की कुछ मूर्ख लड़कियाँ जो ऐसा घर चुनती है, जहाँ माँ अर्थात सास न हो ।।

जिस दिन तमसे मिला, मैं खो सा गया। आम के पेड़ में जैसे, चौसा लगा ।।

तुम जो कहती रही, वो मैं सुनता रहा तुम्हारी बातों से सपने में बुनता रहा

एक बात से तेरी में यूँ ओझल हुआ फिर से बोलो जरा में यूँ बोझल हुआ

कहती थी कि,मिले ऐसे ससुराल मुझे ,जहाँ न हो, सास का दीदार उसे

मेरे दिल में अलग सी ज्वाला जली, कैसे तू अपने घर में पली

मत कर ऐसा जिसे तू सह न सके तेरे गोने से पहले तेरी माँ न मिले

तुमको समझा था मैं एक रानी प्रिये, तुम न बन सकी,
नौकरानी प्रिये

मैं करूँगा दुआ, तुझको मिले बहू खास. जो कहे, मेरी भी, न हो सास
अब न मिलना कभी तुम ये वादा करो जा रही हो कसम से इरादा करो

मिलूंगा तुझसे जब, बनोगी तुम माँ तेरे बेटे की निकलेगी बारात हाँ

वो तो घोड़ी चढे और आगे बढे लौट आए जो घर उसे माँ न मिले।

तुषार पाण्डेय

पथिक मन
उल्लाला छंद

ये इत-उत मनवा दौड़ता, हरि कैसे उसमें बसें।
हूं अभी खड़ी जिस हाल में, वहां काम हर पल डसें।।

परम तत्व को जानना हो तो ध्यान की ऐसी अवस्था चाहिए, जहां ध्येय(विषय) बिल्कुल न बचे। चेतना की बिल्कुल शून्य अवस्था। लेकिन सोचने वाली बात है कि क्या, हमारा मन एक पल भी बिना विचारों के निर्विचार होकर रह पाता है। एक छोटा सा भी विचार छोड़ना हो, तो हमें निराशा और पराजय ही मिलती है। तो क्या हम परमतत्व को नहीं जान सकते।
जिन्होंने जाना है, वे हमेशा कहें हैं कि वो किसी ध्यान से नहीं पाया जा सकता, फिर भी ध्यान के लिए विषय बताए हैं। उन्हें विचारों से नहीं पाया जा सकता। फिर भी कुछ विचारों के माध्यम से निर्विचार तक पहुंचने के मार्ग बताए हैं।
सभी ज्ञानी जानते हैं कि उस तक तो केवल शून्य चित्त होकर ही पहुंचा जा सकता है। लेकिन शून्य चित्तता बड़ी कठिन है। जब मन बिल्कुल खो जाता है, तभी चेतना दर्पण की तरह साफ हो पाती है। जब मन तिरोहित हो जाता है, तभी आत्म साक्षात्कार हो पाता है। इसलिए शून्य चित्तता और मौजूदा हालात के बीच एक सीढ़ी बनानी पड़ती है। आप साकार की पूजा तो करो , लेकिन वहीं ठहर मत जाओ। ये केवल उस परम तत्व तक पहुंचने की सीढ़ी मात्र है। आप साकार की छवि बसाओ तो, लेकिन उस निराकार तक पहुंचने की यात्रा के रूप में। जब साकार भी खो जाएगा, तब उस परम तत्व को जान जाओगे।
परम तत्व तो तब मिलें, शून्य चित्त में जब घटे।
ज्ञान दीप की दीप्ति से,माया के परदा हटे।।

अर्चना आनंद गाजीपुर उत्तर प्रदेश

शीर्षक-विकसित भारत बनाना है

हां, हमें विकसित भारत बनाना है,
एक नया सपना सजाना है।
गांधी के स्वराज को लाना है,
अंबेडकर की समानता को लागू कराना है।
महिलाओं को सम्मान दिलाना है,
बेटियों को हमें खूब पढ़ाना है।
हां, हमें विकसित भारत बनाना है।
हम सब एक हैं,
ना जाति-धर्म का भेद है।
वसुधैव कुटुम्बकम के भाव को जगाना है।
हर युवा शिक्षित हो,
उसका स्वरोजगार हो।
विज्ञान के नए यहाँ खूब आविष्कार हों।
भाईचारा खूब हो,
एकता का भाव हो।
मानव धर्म सबसे बड़ा—ऐसा स्वभाव हो।
पिछड़ों को आगे बढ़ाना है,
और निरक्षरों को पढ़ाना है।
हां, हमें विकसित भारत बनाना है।
स्वच्छता का रहे भान,
यह है भारत माँ का सम्मान।
हर छोटी या बड़ी वस्तु का
हो यहाँ निर्माण।
हमने यह ठाना है,
भारत को आगे बढ़ाना है।
माँ भारती के चरणों में
कुछ पुष्प चढ़ाना है।
हां, हमें विकसित भारत बनाना है,
हां, हमें विकसित भारत बनाना है।

राज जाजमे
मनावर जिला धार(मध्य प्रदेश)

ये कैसा ख़्वाब है जो हर वक़्त ज़ेहन में

ये कैसा ख़्वाब है जो हर वक़्त ज़ेहन में
समाया रहता है , दिन हो या हो रात
हर वक़्त नींद में भी जगाया सा रहता है

जितना भूलना चाहूँ उतना गहरा होता है
ना जाने कौन सा सपना सच होना चाहता है
जब भी इसे अपना समझूँ, बस रेत
सा फिसल जाया करता है

दिल भी ,खामोशी के लम्हों में एक
आहट सा सुनना चाहता है
हर आवाज़ को एक ,
धुन समझना चाहता है
कभी सवाल बनकर पूछूँ तो
चुपके से एक कोने में सिमट जाया करता है

" हमारे अंदर बहुत सी अधूरी चाहतें होती हैं
जो कभी सवाल बन जाती हैं तो कभी
जवाब बन जाती हैं "

मनीष श्रीवास्तव
भिलाई

[गीतिका]

शाश्वत सिद्धांतमयी,निश्छल मन है अपना।
स्वर्गस्थल अंतस्तल,उज्ज्वल मन है अपना।

विषभरा यहीं घट है, पीयूष खोज लेंगे,
वसुधा मधुमय करनी,निर्मल मन है अपना।

मानव का रूप मिला,दानव क्यों हो जायें?
मधुरस वर्षा करनी, बादल मन है अपना।

संपूर्ण विश्वभर में, मुक्ता-मणि भारत है,
ऋषि-वसुंधरा पावन,शीतल मन है अपना।

है उष्ण-रक्त उर में, इतिहास पुरातन है,
दुश्मन दहलाने हैं, विह्वल मन है अपना।

बंधुत्व-एकता के,हम सतत पुजारी हैं,
दुर्भावी क्षम्य नहीं,संबल मन है अपना।

निज तीव्र-दृष्टि चंचल, पत्ते-पत्ते पर है,
मंगल-कामना लिए,कोमल मन है अपना।

सद्धर्म - मर्म रक्षा, आदर्श सनातन है,
अनुपम है संपादन,श्रीफल है मन अपना।

डॉ शेषपालसिंह 'शेष'* आगरा

मानव हो न मानो हार

ख्वाबों को बना लो हकीकत,
ऐसा नित सफल प्रयास करो।
हार जीत का गम नहीं कोई,
चल कर पथ नई राह चुनो।

सीखो तुम उस छोटे पंछी से,
तिनका तिनका घर जोड़ रही।
आंधी के थपेड़ों में भी उसकी,
कभी हिम्मत है न डोल रही।

टूटे घरौंदे को छोड़ पुनः,
नया घरौंदा रच डाला।
निज हिम्मत से आगे बढ़,
जीवन पुनः बदल डाला।

मिलता है सब कुछ कर्मों से,
तो कुछ किस्मत के खेल सही।
निष्क्रिय रहे वो नर पशु जैसा,
मानव हो मानो कभी हार नहीं।

हिम्मत से कुछ मिलता जग में,
निज राह बनानी ही पड़ती हैं।
वहीं वीर लिखता शौर्य गाथा,
हार से हिम्मत न बदलती है।

नए पथ बनाए हैं पत्थरों में,
कांटों को चुन तकदीर लिखी।
निज देश का गौरव बढाया,
कठिनाई न उसे रोक सकी।

जो भी निज मन से हार गया ,
कभी पाता है वो जीत नहीं।
बढ़ते रहो राही नित साहस से,
हर परीक्षा की है नीति यही।

हर बाधा को पार करो खुद,
गिरकर सीखो संभल जाना।
लड़ते रहे निज ध्येय से नित,
मुमकिन कुछ तो है पाना।

जयगान बने जयघोष बने,
न कर्म कोई भी बोझ बने।
जियो सदा ही ऐसा जीवन,
गौरवमयी उन्नत जीवन रचे।

कंचन वर्मा शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश

किताबों का साथ

साथ किताबों का मिलता जब,
लगता है गुरुदेव मिल गये.
जाना पडा न उनके आश्रम,
वे आकर स्वयमेव मिल गये.

कोई गुरु हो शय प्रतिशत तो,
ग्यान शिष्य को कमी न देता.
कुछ ना कुछ तो शेष बचाकर,
अपने पास सदा रख लेता.

सब कुछ वैसा का वैसा ही,
पूरा ग्यान किताबें देतीं.
अध्यवसायी जो भी पाठक,
उनके मन हिम्मत भर देतीं.

सबसे बडी मित्र हैं जग में.
इन से बडा न गाइड कोई.
शर्त यही मन माफिक पढ लो,
इतर नहीं है साइड कोई.

जितना चाहे ऊपर चढ लो,
राह किताबें सदा दिखातीं.
मनुहारों को पूरा करतीं.
रहती अमिट ग्यान की थाती.

गुरुडम के चक्कर में पडना,
लगे अभीष्ट न मुझको यारों.
फिर ग्रंथों की शरण न क्यों लें,
मिलें पाजिटिव दिशा हजारों.

सुशील चन्द्र बाजपेयी
लखनऊ.

दुनिया में भ्रमण

शायद किसी की यादों में हो हम,
शायद किसी के मन में हो हम।
चले गए दुनिया से लेकिन,
कुछ सोच के फिर आए हैं वापस,
दुनिया में करने केवल भ्रमण।
कुछ इच्छाओं ने पग रोक लिए।
वापस बुला रहे थे कुछ रोते हुए मन।
कुछ दोगले लोगों को देखा,
उनको अब समझा तो क्या समझा?
कुछ काम अधूरे रह गए थे।
कुछ बातें मन में रह गई थी।
अब समझाएं तो समझाएं कैसे?
हम तो खुद ही हो गए स्वप्न।
अभी ईश्वर के पास भी जाना है,
यहां तो नहीं ठिकाना है।
वापस आए धरती पर तो,
यूं लगता है यही ठिकाना है।
इच्छाएं उद्वेग साथ छोड़ते नहीं,
परमात्मा की ओर मुख मोड़ते नहीं।

इधर देखूं तो जा सकते नहीं,
उधर देखूं तो आ सकते नहीं।
यह कैसी भूल भुलैया है,
परमात्मा तू ही बता हमें क्या पाना है?
कृपा जो तेरी हो जाए,
राग द्वेष जो लाए साथ हम।
वह यहां के यहां ही छूट जाएं।
वह शून्य जो दिख रहा दूर कहीं,
हम उसमें ही समाहित हो जाएं।

मधु वशिष्ठ फरीदाबाद हरियाणा

स्वर-साम्राज्ञी को श्रद्धा के पुष्प

सुरों की मल्लिका बन कर के,
अमर रहेंगी आशा।
स्वर-साम्राज्ञी संगीत-जगत की,
बन गई अब परिभाषा ।

जिंदादिली औ' हिम्मत लेकर,
पूरी की हर अभिलाषा।
सरल, सरस, संयमित रहती,
इनके संगीत की भाषा ।

सुरों की वह वारिस थम गई,
आशा चली स्वर्ग-लोक को।
गीत-संगीत की मल्लिका चली,
शून्य कर गई संगीत-लोक को ।

हमें छोड़ चली आशा दी,
कौन सुनाए अब गीत?
संगीत-जगत सूना कर के,
बुझ गया सुरों का दीप ।

मीठे स्वर की अमर कहानी,
गूंजेगा हर मन में।
बसेगी आप जन-जन में,
हर धड़कन के स्पंदन में ।

उदास है धरती औ' आकाश,
मौन हुआ हर ओर प्रकाश।
सुर की देवी चली गईं जब,
सूना हुआ हर एक निवास ।

श्रद्धा के दो पुष्प चढ़ाकर,
करते है हम वंदन।
मौन हुई स्वर-साधिका आज,
मिल करते अभिवंदन॥

(रवीन्द्र कुमार रतन, सेनानी-सदन)
हाजीपुर ,बैशाली

स्वागत गीत

स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

स्वागत हमारे निलय हम करें।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

पधारो हमारे निकेतन प्रभू।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

विराजो हमारे मंच प्रभू।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

आप आये हमें है दिल से खुशी।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

आभार प्रियवर हमारा तुम्हें,
स्वागत तुम्हारा कर ना सके।
पलकें बिछा दें सेवा में हम,
चीर करके दिल हम दिखा न सके।।

आशा की किरणें निखरी हुई,
दया दृष्टि कर दो थोड़ी प्रभू ।
तम का घेरा हम पर पड़ा है प्रभू,
रोशनी करके थोड़ी मिटा दो प्रभू।।

आप सक्षम प्रभू ,
हम हैं अक्षम सभी।
देव करुणा की वर्षा,
कर दो थोड़ी ।।

बीजों का रोपण हमने किया,
स्वाद थोड़ा हमें भी चखा दो प्रभू।

स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।।

बृज उमराव कानपुर
उत्तर प्रदेश

परमात्मा की बख़्शीश!

एक लड़की, सुन्दर भोली -भाली!
आकर्षक गोरा चेहरा, मुस्कुराहट वाली!
कद ऊँचा,कमर बल खाती!
पतली कमर , उस पर लम्बे बाल !
उसकी चाल मुग्ध कर जाती!
कभी पंजेबे मधुर झंकार दे जाती!
ढोल की थाप सुन, रह न पाती !
तब जमीन पर कदम लड़खड़ाते!
खुशी से हाथ,कमर थर्रथराती!
जब नाचती तो आँधी थम जाती!

समय के साथ जवान होती जाती!
उसकी कल शादी हो जानी है!
मुस्कुराती ,रिश्तेदारों का स्वागत करती!
स्त्रीगान में किसी नायिका की भांति!
नाच गा -कर मनोरंजन करती!
नृत्य -धमाल , जैसे फर्श तोड़ेगी!
नृत्य की कोई शिक्षा नहीं!
समझो!परमात्मा की बख़्शीश!
कल उसकी शादी हो जाएगी!
नये घर में नया जीवन शुरू होगा !
मालूम नहीं, भावी जीवन कैसा होगा ?
पर आज तो अपना जीवन जी रही!

स्वरचित :सुनील मिनोचा
पंचकूला।

शीर्षक- अक्षय तृतीया महत्व, इतिहास।

शुक्ल पक्ष बैशाख, अक्षय तृतिया सर्वोत्तम।।
बिन देखे पंचांग, करें सब कार्य शुभोत्तम।।
अति महत्व है हिंद, सनातन हर मन मानव।
इसीलिए शुभ कर्म, करें मत मिले पराभव।।

दिन तृतिया इतिहास, हजारों साल पुराने।
जुड़े शास्त्र से ठीक, अक्षय मतलब पहचाने।।
युग-युगादि विख्यात, अक्षय तिथि विश्व सनातन।
सबको है मालूम, शुभं दिन पुण्य- पुरातन।।

सतयुग काल समाप्त,नया त्रेतायुग आये।
परशु,गंग अवतार, लिये दुनिया को भाये।।
नर-नारायण ग्रीव, इसी दिन प्रकटे स्वामी।
किये अनेक सुकर्म , सदा बन अंतर्यामी।।

मिलन सुदामा कृष्ण, अक्षय दिन उनके धामा।
पग धोये रज माथ, लिये बैठाये बामा।।
किये गरीबी दूर, सुदामा प्रिया सयानी।
धन वैभव असबाब, सभी पाई बन रानी।।

प्रिया सुदामा चाह, नगर पूरा हो ऐसा।
कृष्ण नहीं कुछ देर, लगा बनवाये वैसा।।
पाँडु युधिष्ठिर हाथ, दिये वनवास समय में।
अक्षय पात्र रविदेव, घटे मत अन्न तनय के।।

वेद व्यास गण ईश, महाभारत की रचना।
किये अक्षय तिथि आज, बोलकर मुख से वचना।।
महायुद्ध का अंत, अक्षय तिथि हुआ पुरातन।
जीते धर्म-अधर्म, मरे तन हुये विभाजन।।

ऋषभ तपस्वी देव, तपस्या पूर्ण परिस्थिति।
किये पारणा बाद, वही रस इक्षु अक्षय मिति।।
अक्षय सुतिथि दिन चन्द्र, दिवा उच्चासन बैठे।
माने शुभ्र मुहूर्त, इसी से मानव ऐंठे।।

इस कारण यह शुभ्र, अक्षय तिथि प्रबल कहावत।
सत्य-सत्य है लोग, कहें सब जनता भारत।।
करिये सब सद्धर्म, अक्षय तिथि पावन बेला।
सफल करें गण ईश, मिले मत कभी धकेला।।

अमरनाथ सोनी अमर'

भृगु परशुराम

कहीं शास्त्र की गरिमा है, तो कहीं शस्त्रों की ज्वाला है,
वही संहारक है शिव का अंश, तो अमृत का भी प्याला है।
अधर पर मंत्र हैं जिनके भुजा में, वहीं परशु राम होगा ,
बस वहीं है जमदग्नि-नंदन, वही तो जग का उजाला है।।

हुई पीड़ित जब धरती माता।
क्षत्रिय वंस के अत्याचारों से।।
श्री हरि ने छठवीं जन्म लिया।
हरने भूभार पापी व्यवहारों से।।

जमदग्नि रेणुका का पुत्र भृगुवंशी।
फरसा धारक परसुराम कहलाये।।
अंशावतार शस्त्र शास्त्रों के ज्ञाता।
बैशाख सुदी तृतीया त्रेता के जाए।।

थे राम अभेद चट्टान रिपु संघारक।
शिवशिष्य शिव से फरसा पाया था।।
अद्वितीय योद्धा थे इस धरती के ।
और राम से परसुराम कहलाया था।।

देख पिता का अपमान हैहय से।
सहस्त्रार्जुन था जिसका सरदार।।
कार्तवीर्य सा क्षत्रिय शर काटकर।
रक्त रंजित पंचझील किया तैयार ।।

शिष्य जिनके भीष्म द्रोण कर्ण ने।
अचूक शस्त्रों का लिया पूर्ण ज्ञान।।
कल्पकाल तक चिरंजीवी रहने को।
श्री हरि, विष्णु ने है दिया वरदान ।।

बसंत श्रीवास "वसंत"(नरगोड़ा)
रामकृष्ण मिशन आश्रम नारायणपुर
छत्तीसगढ़

• *गुलाब की दास्तां* •

गुलाब की तारीफ़ करते कोई नहीं थकता ?
उसकी गंध का दीवाना सारा संसार हो जाता
'सुंदर है, मज़े ही होंगे'—
ऐसा इंसान है सोचता
पर बेचारे की दुविधा कोई नहीं समझता

अपनी सुन्दरता के कारण अपनी डाल से बिछड़ता
इस बिछोह को कभी बदल नहीं सकता
अपने काँटें की बदौलत गालियाँ है सुनता
इस बेचारे की दुविधा को कोई नहीं समझता

यह गुलाब है....
कभी भगवान के कदमों में तो
कभी मुर्दों से है मिलता
इस बेचारे की दुविधा को कोई नहीं समझता|

पुरुजीत बुडानिया
बीकानेर, राजस्थान

रिश्तों में मिठास का सूत्र

रिश्ते केवल नाम नहीं, ये मन का एक बसेरा हैं,
जहाँ निस्वार्थ भाव बसता, वहीं सुख का सवेरा है।
जैसे माटी की खुशबू से, उपवन महक उठता है,
वैसे ही अपनों के दुलार से, जीवन चहक जाता है।

अभिमान की तपिश अक्सर, धागे झुलसा देती है,
पर क्षमा की शीतल बूँदें, फिर से उन्हें सी देती है।
रिश्ता वो नहीं जो बस, अधिकार जताना जाने,
रिश्ता वो है जो चुप रहकर भी, हर पीड़ा को पहचाने।

कड़वे वचन की तीर छोड़, मीठी वाणी को अपनाओ,
रिश्तों की खाली गागर में, प्रेम का अमृत भरते जाओ।
जब शब्द हार जाएँ अक्सर, तब मौन से साथ निभा देना,
कोई अपना अगर उदास दिखे, तो हँसकर हाथ बढ़ा देना।

छोटा-सा इक स्पर्श कभी, बड़े घाव भर देता है,
प्यार भरा एक शब्द सदा, अपनों को बल देता है।
रिश्तों की क्यारी में तुम, विश्वास के बीज उगाना,
प्यार और दुलार से तुम, रूठों को सदा मनाना।

संतोषी डनसेना (रूही) जशपुर छत्तीसगढ़

"अंतद्वन्द्व"

चुप रहती हो क्यो ? बोलती कुछ नही
छुट गया क्या कोई सपना
रूठा है क्या कोई अपना
क्यो जीवन से नहीं लगाव
क्या? जीवन लगता है दुःखो का अंबार
आखिर कारण क्या है?
जो तुम रहती इतनी उदास ।
जीवन तो एक पहेली है
कभी हसाती तो कभी रुलाती है
इसलिए उठाओ अभी तलवार
हो जाओ जंग के लिए तैयार
बिजय तुम्हारी निश्चित है।
विजय न मिली तो विरगति तो निश्चित है |
हर सिक्के के दो पहलू होते हैं।
खुशियां न आई जीवन मैं तो
गम की बेला तो निश्चित है।।

संगीता शुक्ला,
हंसराजपुर, होलागढ़,प्रयागराज

शीर्षक: - अंतिम पेड़ की छाया " भीष्म पितामह"

माँ गंगा और राजा शांतनु के
हुए एक वीर पुत्र महान,
अपनी कठोर प्रतिज्ञा के कारण
“भीष्म” पड़ा उनका नाम।

वृक्ष के समान जड़ों से मजबूत,
हर परिस्थिति में अडिग खड़े थे,
सत्यनिष्ठ और धर्मपरायण देवव्रत,
अपने वचनों पर दृढ़ अड़े थे।

विशाल वृक्ष-से पितामह थे,
निस्वार्थ देते स्नेह की छाया,
कौरव-पांडवों के मार्गदर्शक बन,
हर पथ अपना कर्तव्य निभाया।

फल थे उनके अमूल्य अनुभव,
पुष्प-सा सुगंधित था ज्ञान,
अपनी शिक्षा और मार्गदर्शन से
सबको देते समान सम्मान।

वृक्ष की भाँति आंधी-तूफानों में,
दृढ़ता का परिचय देते रहे,
त्याग और धैर्य की प्रतिमूर्ति बन,
संकट में भी अटल रहते रहे।

पर समय के चक्र ने घेरा उन्हें,
प्रण की रक्षा में बंधते रहे,
कौरवों का साथ निभाने को,
अपने ही धर्म से लड़ते रहे।

कुरु वंश की रक्षा की प्रतिज्ञा ने,
उन्हें सेनापति बनाया,
अर्जुन के बाणों की शरशय्या पर,
कुरुक्षेत्र में रक्त बहाया।

महाभारत के इस भीषण युद्ध में,
आखिर कौन विजयी कहलाया?
धर्म-अधर्म की इस लड़ाई में,
अपनों ने ही अपनों का रक्त बहाया।

जब वीर पितामह ने प्राण त्यागा,
हस्तिनापुर के सिर से उठ गया साया।
जिसने जीवन भर सबको संभाला था,
ढह गया वह, मानो अंतिम पेड़ की छाया।

-श्रीमती अंजना दिलीप दास
बसना छत्तीसगढ़

शिक्षा पर मुक्तक -

शिक्षा सिर्फ अक्षर जोड़ना नहीं सिखाती,
वो अंधेरे में रास्ता खोजना सिखाती है।

नंबर की दौड़ नहीं,
न अव्वल आने की जंग,
शिक्षा तो गिरकर खुद संभलना सिखाती है।

माँ की लोरी से शुरू होता पहला पाठ,
पिता के पसीने में लिखा होता दूसरा पाठ।

स्कूल की घंटी, गुरु का डांटना-समझाना,
जिंदगी खुद बन जाती रोज नया अफसाना।

शिक्षा वो है जो दिल में इंसानियत भरे,
भूखे को देखकर अपना निवाला सामने धरे।

शिक्षा नहीं है सिर्फ किताबों का बोझ,
न ब्लैकबोर्ड पर लिखे सूत्रों का शोर।

शिक्षा तो दीपक है अंधेरे मन का,
जो खुद जलकर करता दूर घोर तम का।

बचपन की आँखों में जो सपने पलते हैं,
शिक्षा ही उन सपनों को पंख लगाती है।

गिरकर संभलना, फिर से उठकर चलना,
हर ठोकर से शिक्षा ही सबक सिखाती है।

डिग्रियों से नहीं नपती इंसान की तोल,
न मार्कशीट तय करती है अक्ल का मोल।

कलम की ताकत तलवार से भारी होती है,
एक शिक्षक पूरी तकदीर बदल जाता है।

इसलिए पढ़ो, बढ़ो, सवाल भी खूब करो,
शिक्षा पर असली आज़ादी का नाम धरो।

डॉ सीता देवी राठी कूचबिहार पश्चिम बंगाल

हरियाली आज उदास है

गलोबल वार्मिंग ने छीन लिया समय काल प्रसंग।
रितु मौसम चक्र बदला, बदला जीवन जीने का ढंग।

ऊंची इमारतें, वाहन कारखानों का धुआं और शोरोगुल
दमघोंटू श्वास।
जज़्बात की नमी हुई कम,सूखा पड़ा धरा का एहसास।

प्रेम और सौहार्द्र हुआ भ्रमित, नीड़ नहीं पंछी के पास।
सूरज हुआ लाल, सूखे खेत-खलिहान -रंगों का हुआ ह्रास।

नैसर्गिक संसाधनों अत्यधिक के दोहन का गहरा संताप।
पथरीली कंक्रीली मिट्टी रूठ गया सुख स्पर्श अहसास।

मनचली बयार चुप, बूंदों में नहीं अमृत रूपी उजास।
जलवायु परिवर्तन से लुप्त हुईहरियाली के मन की आस।

जहां धरा प्यासी,वहीं संबंधों के रंग फीके और उदास।
जिंदगी ढूंढ रही खुशहाली- सुकून भरी शाम हो काश।

डॉ पूनम ग्रोवर
हापुड़

शीर्षक _बस एक चाह

मुठ्ठियों ने नन्ही नन्हीं
जकड़ लिए थे अहसास,
भींच लिए थे ममत्व जाल में
सारे क्रिया कलाप॥

तन मन का हिस्सा थे तुम।
मेरे बच्चे..तेरे हित..मेरे आस !
मात-पिता हम कहलाए ...
समझ स्वयं को बड़ भाग॥

नन्हे नन्हे डग ये चल कर..
नाम कमाए..दौलत का भंडार।
बस एक चाह थी..जीते तू...
जग सारा..यह संसार॥

आज से नहीं थे कोई ..
मेरे भाव लाचार ।
एक चाह उमड़ी है ..बस
अंत समय.. हो तेरा साथ ॥

सशक्त हाथ..थाम मुझे ...
सुला दें..धर काँधे अर्थी मेरी
चिता की..चिर शैय्या पर
सुखद निद्रा साथ ॥

अलका गुप्ता 'भारती' मेरठ

विधा- ग़ज़ल
शीर्षक - मन आँगन सजाया था

उसी की प्रीत से मन का कभी आँगन सजाया था।
कि जिसने कर दिया बेघर उसे दिल में बिठाया था।।

कहानी इक बना दी प्रीत की जिसने जहां भर में।
बडे अनुराग से उसकी मुहब्बत को सजाया था।

कभी दोनों जहां कहकर बुलाते थे हमें हमदम।
वही दिल तोड़ बैठे जो न सपने में दुखाया था।

हमारे बिन कभी इक पल सजन जी रह न पाते थे।
उन्हें ही यूँ बिछड़ना अब हमारा रास आया था।

बसाकर 'सुख' भला कैसे हुए पामाल ये रिश्ते।
नहीं उनको हमारी याद ने इक पल सताया था।

सुखमिला अग्रवाल'भूमिजा'
मुंबई

ग़ज़ल

रातों की नींद, दिन के उजाले चले गए
वो बार-बार नज़रें जो डाले चले गए

मेरी कोई मुराद न पूरी की आज तक
हर बात कल पर देखिए टाले चले गए

रहता नहीं, ख़याल उन्हें ऊँच-नीच का
हर बात उनकी हम ही सँभाले चले गए

मैं नाचती ना कैसे नज़रों को देखकर
वो चाँदनी में सुर को निकाले चले गए

ख़ामोशियों को मैंने झिंझोड तो बारहा
वो लबों पर डालकर ताले चले गए

अब 'दीपिका' सुनाएँ किसे दिल का हाल हम
जो दोस्त थे हमारे वो निराले चले गए

डॉ. दीपिका सुतोदिया 'सखी'

शीर्षक बड़ी विरासत

पुरखो से विरासत में मिली हो
जिन्हें गेहूं चावल बेचने की दुकान
वे परिश्रम से कमाए
स्वाभिमान का महत्व कैसे जान पाएंगे.....

जो खाते हो दूसरों के मुंह से
छीन कर के निवाला
वे पसीने से कमाई नून रोटी
का महत्व कैसे जान पाएंगे....

ईमान बेच कर खड़े कर लिए हो
जिन्होंने अपने महल
वे मजदूरी करके रहने वाले
किराए के मकान का महत्व कैसे जान पाएंगे.....

छल करके मुस्कुराना
जिनकी आदतों में हो गया सुमार हो
वे निश्चल के आंखों से बहे
आंसुओं का महत्व कैसे जान पाएंगे.....

नीतेश कुमार

शीर्षक- " माँ "

दुनिया का सबसे बड़ा मानसिक सहारा थी तुम " माँ "।
हर समस्या की समाधान थी तुम "माँ"।
जीवन मे उपायों का खजाना थी तुम "माँ" ।

पग पग जीवन मे तुमने मुझे सम्हाला था "माँ"।
तेरा ही हाथ पकड़ कर जीवन के पथरीले राहो पर चलना सिखा था" माँ "।
जीवन मे तुमने ही हर रंग भरा था" माँ "।
तेरी नाराजगी मे भी जीवन की सीख छुपी थी " माँ "।
हर पल तेरी नजरों की पहरेदारी मे जीवन सुरक्षित था " माँ
तेरी हर फटकार के हर शब्द मे गुडशिक्षा छुपे थे " माँ "।

कभी सपने मे भी सोचा न था।
जीवन चक्र इतना घूम जाएगा।
ऐसा भी दिन जीवन मे आएगा।
तेरे बिना जीवन काटना पड़ जाएगा।
तेरी याद ही हमारा सहारा रह जाएगा।
तेरा दर्शन भी जीवन मे दुर्लभ हो जाएगा।

ये कैसा जीवन है "माँ"।
तेरे बिना सारा संसार सूना है "माँ"।
तेरे हाथ के स्पर्श को मन तरस रहा है "माँ'"।
एक बार तो तु कहीं दिख जाती "माँ"।
मेरे नैनो को तृप्ति मिल जाती" माँ "।
तेरे दर्शन की प्यास बुझ जाती " माँ "।
तेरे आंचल के छाव मे अपना जीवन पुनः मै जी लेती " माँ "।

भारती श्रीवास्तव छिंदवाड़ा

एक झलक

कर्नाटक कश्मीर है, कारवार ,
पुण्य भूमि को प्रणाम बार बार।
स्थित है,श्री रामकृष्ण आश्रम,
नित्य पूजा गीता पाठ प्रवचन ।

निकट ही नेल्लूर, श्री शारदाश्रम,
प्रभानन्द जी के भजनों से, रत है हम
विवेकानंद मठ है सदाशिवगढ़ में,
भक्तोंका तांता लगता है उत्सव में।

काली सागर,संगम में एक,
अदभूत काली मंदिर आकृष्ट नेक।
देखते याद आती है,दक्षिणेश्वर की,
परमहंस रामकृष्ण,मां शारदा देवी की

शांत वातावरण,प्रफुल्लित मन,
यहां आकर पुनीत होते है जन ।
प्रभानंदजी ने नींव विस्तार किया,
भावेशानंदजी ने शुशोभित किया।

मां की मेहनत,ताई की सेवा,
महाराजोंका प्रेम,अति आनंद वाह।
कारवार तो कारवार एक झलक,
देखोगे तो न मुन्दोगे अपने पलक।

प्रो माणिक कृष्ण केरवड़ीकर

कहते हैं कि वक्त की सबसे अच्छी बात है कि वो बदलता है

कहते हैं कि वक्त की सबसे अच्छी बात है कि वो बदलता है
फिर यह बुरा वक्त इतना लंबा क्यों लगता है?
अच्छे दिन तो बीत गये जल्दी ,
फिर ये बुरे दिन ही काटना सजा क्यों लगता है?
पर हर रात हमें सब्र सिखाती है,
अँधेरे के बाद रोशनी का इंतज़ार कराती है
चाहे कितना ही परेशान क्यों ना हो इंसान,
हर काली रात के बाद सुबह जरूर आती है |
कल्याण होगा तभी
जब आगे बढ़ेंगे सभी
जब पहल होगी अभी
ना टालेंगे इसे फिर कभी
समृद्धि होगी तभी
जब घर की लक्ष्मी का आदर करेंगे सभी
बेटियों के सपनों को ना तोड़ेंगे कभी
आओ मिलके प्रण ले अभी
दुःख के साथी

भीगे हुए नयन सजल अश्रु से
मत दिखाना किसी को भी।
लोग आएंगे सुनेंगे तुम्हारे दर्द को,
किस्सों को,
बड़े चाव से।
हमदर्दी जताएंगे तुमसे, बड़े मासूम बनकर।
जताएंगे अपने को सबसे बड़ा हमदर्द।
फिर थोड़ी देर बाद सामने वाली पंक्ति में खड़े होकर
तुम्हें ही नीचा दिखाएंगे।
क्योंकि वह जान गए हैं तुम्हारी कमियों को।
इसलिए खुशियाँ बांटना सबके संग।
गमों को पीना अपने अकेले
या किसी भरोसेमंद के संग।
जो सही मायने में तुम्हारे दुःख में तुम्हारे साथ खड़ा होगा
वही वास्तव में तुम्हारा होगा
चाहे वह किसी भी रिश्ते में क्यों ना हो।
मायने खून के रिश्ते नहीं रखते।
मायने दर्द के रिश्ते रखते हैं।
जो निभाते हैं साथ दुख में
विपरीत परिस्थितियों में।
वही अपने होते हैं।
क्योंकि परीक्षा की घड़ी में
वही तो
साथ खड़े होते हैं।

रिंकी अग्रवाल 'प्राची'
खुर्जा बुलंदशहर उत्तर प्रदेश

क्या कहेंगे...

लोग क्या कहेंगे,
इस सोच में हम जीते रहे,
अपने अरमानों को दिल में दबाकर,
दूसरों के डर में जीते रहे।

हर कदम पे रुक-रुक कर चले,
हर ख़्वाब अधूरा छोड़ दिया,
उन अनदेखे चेहरों के खातिर,
अपना ही दिल तोड़ दिया।

कभी सोचा है क्या हमने,
ये लोग हैं कौन भला?
क्या सुख में साथ निभाते हैं?
या दुख में देते हैं कंधा?

जब आँसू चुपके से बहते हैं,
तब कोई भी पास नहीं आता,
तब अपनों की ही छाया में,
हर दर्द को सुकून मिल पाता।

फिर क्यों लोगों बातों से,
अपने सपनों को बाँधें हम?
जो साथ चलें वही अपने हैं,
बाकी सब हैं केवल भ्रम।

अब छोड़ो ये "लोग क्या कहेंगे",
अब खुद की राह बनानी है,
अब जो दिल करे गवारा ,
बस वही कहानी लिखनी है।

डॉ.दीप्ति खरे
मंडला(मध्य प्रदेश)

शीर्षक- पंख पसारे भरे उड़ान

मैं चिड़िया बाबुल के घर की ,
मुझको पंख फैलाने दो ।
नील गगन तक जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मुझको बाबुल उड़ जाने दो ।
मुझे मत रोको मुझे मत टोको,
मैं रानी झाँसी बन जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मैं चिड़िया बाबुल के घर की ,
मुझको पंख फैलाने दो ।
मैं माता अहिल्या बन जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मैं मेरी काम बन जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मुझको पंख फैलाने दो ,
मुझे मत रोको मुझे मत टोको।
मैं शकुंतला देवी बन जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मैं चिड़िया बाबुल के घर की,

मुझको पंख फैलाने दो ।
मैं कल्पना चावला बन जाऊँगी,
नया इतिहास रचाऊँगी ।
मुझे मत रोको मुझे मत टोको,
मुझको पंख फैलाने दो ।
मुझे आज उड़ जाने दो ॥

माधुरी निगम मधुबन

प्यारे कृष्ण कन्हैया

प्यारी सी झलक सुन्दर सा
रूप है कृष्ण अवतारी
चक्षुओं का प्याला प्रेम
तुम्हारा है वृंदावन गिरधारी
हर झलक मनमोहक क्या
करू वर्णन तुम्हारा
आकर्षक अठखेलियाँ रास
रचैया है माखन मुरारी
कण-कण मे बिखर रही
लालिमा तुम्हारी ओ कृष्ण प्यारे
दूधमलाई माखन मिसरी
भोग लगाये है बनवारी
नजर नहीं हटती मोर
पंखों का मुकुट तेरा
पीला पीताम्बर मन में
समाये है बाँके बिहारी
माखन चुराये मटकी
फोड़े ग्वाल संग खेले
गोकुल के प्यारे यशोदा
के लाल है मुरली धारी
धूमिल छवि सांवरो
सलोना ये लड्डू गोपूल
ब्रह्मांड दिखाकर मुख में
यशोदा के है त्रिपुरापी
मंथमुग्ध लीलाएं गोपियों
के संग, ग्वालो के मित्र
राधा के प्रियतम रुकमणी के
अराध्य मीरा के है गिरधारी
मन मंदिर में बसे
मोहन करू में वंदन
भक्ति में तेरी शक्ति
कन्हैया है पूर्णवतारी

" कविता नामदेव ",...नजीबाबाद बिजनौर (उ.प्र)

सपने बड़े देखो

सपने बड़े देखो...
लोग कहते हैं, सपने अपनी 'औकात' देख कर बुनो,
मगर मैं कहती हूँ, तुम अपनी 'उम्मीद' देख कर चुनो।

बड़े सपनों में एक अलग सुकून, एक अलग शांति होती है,
वरना बिना सपनों के तो ज़िन्दगी सिर्फ एक मजबूरी होती है।
अगर आँखों में सपने हों, तो वीरान जीवन भी सँवर जाता है,
इन्हीं से तो इंसान में साहस, हौसला और दृढ़ता का जज़्बा आता है।
जो भी करो, बस दिल से और पूरे समर्पण के साथ करो,
फिर देखो, कैसे नामुमकिन भी मुमकिन की राह पकड़ता है।
रास्ते में लोग खिलाफ होंगे, कई असफलताएँ भी आएँगी,
पर अगर तुम अपनी ज़िद पर अड़े रहे, तो मंज़िल खुद पास आएगी।

जब इरादा पक्का हो, तो परमात्मा भी साथ देता है,
और अंत में जीत का सेहरा, सिर्फ तुम्हारे सिर सजता है।
इसलिए... सपने हमेशा बड़े देखो।

दिशा शाह कोलकाता पश्चिम बंगाल

शीर्षक : श्रीराम

सारी दुनियाँ अभिभूत है,
श्री राम के आने पर ।
उनका आभा मंडल पूरी
अवधपुरी में छाने पर ।
बाट जोहती सारी जगती,
नारायण कब आएंगे ।
वसुधा को कष्टों से कब तक,
वह परित्राण दिलायेंगे ।
अमानुषों के अन्याय से,
धरती माता रोती थी ।
ढ़ाढ़स नहीं बँधाने वाला ,
अतः धैर्य वो खोती थी ।
ज्ञानी कहते कष्ट मिटेंगे,
सिर्फ ईश के आने पर ।
उनका आभा मंडल पूरी - - ॥ [1]

मनु सतरूपा ने जंगल में,
हरि का भजन किया भारी ।
उनके तप से वह खुश बोले,
मांगो, वर इच्छाधारी ।
राजा रानी बोले प्रभु जी गर,
खुश हैं तो यह वर दो ।
अपने जैसा पुत्र नाथ दे,
हमें अभय अमर कर दो ।
'एवमस्तु' कह गये मिले न,
आँखों के खुल जाने पर ।
उनका आभा मंडल पूरी - - ॥ [2]

भक्तवत्सल श्रीराम जी,
जब साकेत में आये ।
घर घर में गाये बधाये,
वह अयोध्या में छाये ।
रंग बिरंगे फूलों से सबने,
नगरी को महकाया ।
सरयू के जल में खुशियों का,
इक उछाल सा आया ।
दीप जलाकर के लोगों ने,
बेहद खुशी मनाई ।
ऐसा लगे दिवाली से पहले,
एक दिवाली आई ।
पुरवासियों ने किया था,
रघुवर का सत्कार ।
उनका आभामंडल पूरी - - ॥ [3]

डॉ राम अवतार शर्मा "राम "
बाड़ी (धौलपुर) राजस्थान

शीर्षक-- "शांत है"

मैंने सोचा.....
घर में शांति है।
हर चीज करीने से रखी है।
घंटी बजाई.....
कोई बाहर नहीं आया ?

अंदर गई .....
और अंदर देखा तो,
एक ही नजारा....
सब अपने मोबाइल में व्यस्त ,
कोई ब्लूटूथ लगाकर ...
कोई ईयर फोन लगाकर...

घर में शांति है
घर शांत है....

श्रीमती कल्पना सचदेव बिलासपुर (छत्तीसगढ)